इरेडा
IREDA

अक्षय क्रांति

अंक: जनवरी से दिसंबर, 2017 खंड : वार्षिक

अक्षय क्रांति

संरक्षक

श्री के. एस. पोपली

अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

परामर्शदाता

डॉ. पी. श्रीनिवासन

महाप्रबंधक (मा.संसा.)

संपादक मंडल

श्री नरेश वर्मा

वरि. प्रबंधक (मा.संसा.)

श्रीमती संगीता श्रीवास्तव

प्रबंधक (राजभाषा)

विशेष सहयोग

श्री आलर कुल्लू, सहा. हिंदी अधिकारी

श्रीमती शशि बाला पपनैं, सहा. अधिकारी (जनरल)

श्री कुलदीप सिंह, कनि. हिंदी अनुवादक

सुश्री तुलसी, वरि. कार्यालय सचिव

अक्षय क्रांति

इरेडा IREDA

अनुक्रमणिका

क्र.सं.	विषय	रचना वर्ग	लेखक/रचयिता सर्वश्री/सुश्री	पृष्ठ संख्या
1.	संदेश-अध्यक्ष एवं प्रबंधक निदेशक	-----	-----	-----
2.	इंडिया मार्चेज इन टू अ न्यू डॉन	-----	-----	4-7
3.	प्रतिस्पर्धात्मक लाभों के लिए सशक्तिकरण	लेख	डॉ. पी. श्रीनिवासन	8-9
4.	पर्यावरण सुरक्षा	लेख	भूपिंद्र कौर	10-11
5.	असीरगढ़	लेख	डॉ. स्वाति तिवारी	12-16
6.	न्यू ईयर पर कैशलेस डांस	लेख	रेनु गुलाटी	17-18
7.	काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान	यात्रा संस्मरण	डॉ. स्वाति तिवारी	19-24
8.	मन की बात - बन गई जन-जन की बात	कविता	कंछिद कुमार	25
9.	कनेक्टिंग पीपल टू नेचर	लेख	प्रसून कुमार झा	26-27
10.	दर्पण की खूबी	कविता	प्रेम सिंह चन्देलिया	28
11.	भारतीय संविधान के महान शिल्पकार: डॉ. भीमराव आंबेडकर	लेख	कंछिद कुमार	29-33
12.	आइसक्रीम, बच्चा और समाज	लेख	मीतू माथुर बधवार	34-36
13.	भारतीय वीरों को नमन	कविता	कंछिद कुमार	37
14.	गोस्वामी तुलसीदास का रचना वैविध्य	लेख	गौतम कुमार मीणा	38-47
15.	राजभाषा गतिविधियाँ	विवरण	राजभाषा अनुभाग	48-56

के. एस.पोपली
अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था लिमिटेड
Indian Renewable Energy Development Agency Limited

संदेश

कोई भी भाषा सबसे सहज और सरल अपनी मातृभाषा या देश की भाषा में होती है । जो भाषा जितनी अधिक दूसरी भाषाओं के शब्दों को अपने में शामिल करती है, उसका अपनाने का दायरा उतना ही अधिक बढ़ जाता है ।

इरेडा में हिंदी कार्यान्वयन और अनुपालन से संबंधित गतिविधियों का आयोजन वर्ष भर किया जाता है । इन गतिविधियों से कार्यालय में हिंदीमय वातावरण का निर्माण होता है और कार्मिकों की हिंदी के प्रति अभिरुचि जाग्रत होती है । **इरेडा में कार्मिकों को हिंदी में कार्य करने के लिए प्रोत्साहित करने हेतु प्रोत्साहन योजनाएं लागू की गई हैं । नराकास के तत्वावधान में राजभाषा संगोष्ठी का आयोजन किया गया जिसमें विभिन्न उपक्रमों के 78 कार्मिकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया ।**

इसी दिशा में इरेडा की "ई पत्रिका" पिछले 4 वर्षों से प्रकाशित की जा रही है जिसमें विभिन्न साहित्यिक, सामाजिक-आर्थिक और राष्ट्रीय आयामों का समावेश कर हर अंक को नए रूप में प्रस्तुत करने का प्रयास किया गया है ।
आज भारत एक विश्व शक्ति के रूप में आगे बढ़ रहा है । यदि हम राजभाषा हिंदी को ज्ञान-विज्ञान, अर्थव्यवस्था, सूचना प्रौद्योगिकी आदि सभी क्षेत्रों से जोड़ें तो इन क्षेत्रों का लाभ जन-जन तक अधिक अच्छी तरह से पहुँच सकता है । **कार्यालयी कामकाज में सरल एवं सहज हिंदी का प्रयोग किया जाए ताकि सभी इसे अपना सकें ।** यह याद रखना आवश्यक है कि संघ की राजभाषा नीति का मुख्य उद्देश्य राजकीय कार्य मूल रूप से हिंदी में करना है । मूल रूप से कार्यालयीन कार्य हिंदी में किए जाने से ही राजभाषा हिंदी का प्रयोग बढ़ेगा तथा राजभाषा नीति का सही मायनों में कार्यान्वयन संभव होगा ।

ई-पत्रिका के इस अंक के प्रकाशन के अवसर पर मैं सभी इरेडा कार्मिकों से आग्रह करता हूं कि वे इस पत्रिका को पढ़कर लाभांवित हों और इसके आगामी अंक को और अधिक रोचक बनाने के लिए अपने-अपने लेखों/रचनाओं का योगदान अवश्य दें ।

(के. एस. पोपली)

इंडिया मार्चेज इंटू अ न्यू डॉन

के शीर्षक से एचटी मीडिया द्वारा प्रकाशित कॉफी टेबल बुक में सीएमडी, इरेडा द्वारा दिए गए साक्षात्कार के अंश

शाश्वत ऊर्जा

भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास एजेंसी लिमिटेड (इरेडा) - एक मिनी रत्न (श्रेणी -I) सरकारी उद्यम, देश की अक्षय ऊर्जा परियोजनाओं के वित्तपोषण के लिए समर्पित एकमात्र संस्थान है। तीन दशकों में फैले 2400 परियोजनाओं का नेतृत्व करने के बाद, इरेडा प्रधान मंत्री की स्वच्छ ऊर्जा दृष्टि के साथ 175 गीगावाट के भारत की महत्वाकांक्षी हरित ऊर्जा लक्ष्य का समर्थन करने के लिए तैयार है ।

> **भारत में बिजली की मांग बढ़ती जा रही है, इरेडा को उम्मीद है कि वह भारत की अक्षय ऊर्जा की गाथा में सबसे आगे हो ।**

11 मार्च, 1987 को कंपनी अधिनियम, 1956 के तहत एक सार्वजनिक लिमिटेड सरकारी कंपनी के रूप में स्थापित, इरेडा अक्षय ऊर्जा और ऊर्जा दक्षता / संरक्षण परियोजनाओं को बढ़ावा देता है, विकसित करता है और वित्तीय सहायता प्रदान करता है । इरेडा को कंपनी अधिनियम, 1956 की धारा 4 "ए" के तहत "सार्वजनिक वित्तीय संस्थान" के रूप में अधिसूचित किया गया और भारतीय रिजर्व बैंक (आरबीआई) के साथ गैर-बैंकिंग वित्तीय कंपनी (एनबीएफसी) के रूप में पंजीकृत किया गया ।

कंपनी का मुख्य उद्देश्य अक्षय ऊर्जा और ऊर्जा दक्षता / संरक्षण परियोजनाओं में कुशल और प्रभावी वित्तपोषण प्रदान करने के लिए एक अग्रणी संगठन के रूप में अपनी स्थिति बनाए रखना है। अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में अपने हिस्से को नवीन वित्तपोषण के माध्यम से बढ़ाने के लिए । ग्राहकों की सेवाओं, प्रक्रियाओं और संसाधनों के निरंतर सुधार के माध्यम से ग्राहकों को प्रदान की जाने वाली सेवाओं की दक्षता में सुधार और ग्राहकों की संतुष्टि के माध्यम से प्रतिस्पर्धी संस्था बनने का प्रयास करना ।

2014 में सीएमडी का पद संभालने से पहले इरेडा में तकनीकी निदेशक के रूप में कार्य करने वाले इलेक्ट्रिकल इंजीनियर-सह-विद्वान वकील, श्री कुलजीत सिंह पोपली का मानना है कि 2019 तक सभी के लिए बिजली उपलब्ध कराने की सरकार की योजना हासिल की जा सकती है यदि अक्षय ऊर्जा पर पर्याप्त जोर दिया जाता है ।

"अक्षय ऊर्जा (आरई) क्षेत्र सभी स्टेक होल्डरों को भारत के विकास की गाथा का हिस्सा बनने का अवसर प्रदान करता है। ऊर्जा किसी भी देश के आर्थिक विकास के लिए एक बुनियादी आवश्यकता है क्योंकि प्रत्येक क्षेत्र - कृषि, उद्योग, परिवहन, वाणिज्यिक और घरेलू में ऊर्जा स्रोतों की आवश्यकता है । सरकार द्वारा 2022 तक 175 गीगावाट आरई पावर स्थापित करने का महत्वाकांक्षी लक्ष्य इरेडा के लिए एक बड़ा व्यापार अवसर भी प्रदान करता है। भारत में आरई के लिए प्रमुख ऋणदाता होने के नाते, हम तेजी से विकास करना चाहते हैं और आने वाले वर्ष में भारत में कुल नवीकरणीय ऊर्जा स्थापित क्षमता में कम से कम 15-20 फीसदी हिस्सेदारी रखकर अपनी नेतृत्व स्थिति बनाए रखना चाहते हैं।"

अक्षय ऊर्जा जलवायु परिवर्तन पर ध्यान देने, नए आर्थिक अवसर पैदा करने और आधुनिक ऊर्जा सेवाओं के बिना रह रहे लाखों लोगों तक ऊर्जा पहुंच प्रदान करने में भी महत्वपूर्ण है। दूर-दराज और ग्रामीण क्षेत्रों में अक्षय ऊर्जा परियोजना की स्थापना से स्थानीय बुनियादी ढांचे के विकास में मदद मिलेगी और "रोज़गार के अवसर सृजित होंगे, जिससे समग्र विकास और स्टार्ट-अप के अवसर भी मिलेंगे"।

हालांकि, सभी स्टेकहोल्डरों के बीच सक्रिय भागीदारी और निकट समन्वय, चाहे वो केंद्र सरकार, राज्य सरकार, नियामक प्राधिकरण या डेवलपर्स, फाइनेंसर, विनिर्माणकर्ता, इत्यादि हों, अक्षय क्षमता में वृद्धि के लिए स्केलिंग में बहुत महत्वपूर्ण हैं । "इसी तरह, संबंधित राज्य नोडल एजेंसियों की भूमिका और पहल का केंद्रीय और राज्य सरकारों के प्रयासों के समन्वय में सर्वोच्च महत्व है। सरकार द्वारा जारी पहलों के साथ मिलकर विभिन्न स्टेकहोल्डरों के बीच सहयोग, अक्षय ऊर्जा के स्केलिंग को समर्थन देने के लिए देश के लिए सबसे बड़ा अवसर प्रदान करता है, " सीएमडी महोदय कहते हैं ।

सीएमडी महोदय का मानना है कि डेवलपर्स के साथ 3.46 रुपए प्रति किलो वाट घंटा की कीमत का हवाला देते हुए 1 गीगा वाट विंड निविदा के लिए और 2.97 रुपए प्रति केडब्ल्यूएच (लेवलाइज्ड टैरिफ -- 3.2 9 रुपए प्रति केडब्ल्यूएच) मध्य प्रदेश के रीवा में 750 मेगावाट सौर ऊर्जा संयंत्र के लिए भारत की हरित ऊर्जा क्षेत्र ने रिकॉर्ड न्यून पवन और सौर ऊर्जा परियोजनाएं आकर्षक बिडिंग के बाद अच्छे दिन ला दिए हैं । इसने ऊर्जा की सबसे अधिक प्रतिस्पर्धी स्रोतों में से सौर और पवन को सुस्थापित किया है। "इस तरह की आक्रामक बोली का प्रभाव यह है कि स्वच्छ ऊर्जा दरें जीवाश्म ईंधन वाली बिजली के टैरिफ को चुनौती देने में काफी कम हो सकती हैं । हालांकि इस प्रगति को देश में स्वच्छ ऊर्जा को प्रोत्साहित करने हेतु सरकार के प्रयासों को बढ़ावा देने के रूप में देखा जाता है, नीलामी के परिणाम अधिक महत्व देते हैं क्योंकि भारत ने पहले ही 2022 तक 100 गीगावाट सौर और 60 गीगावाट पवन ऊर्जा क्षमता स्थापित करने का एक महत्वाकांक्षी लक्ष्य निर्धारित किया है और इन नीलामी के परिणामों ने यह तय किया है कि लक्ष्य हासिल करने के लिए भारत अच्छी तरह से आगे बढ़ रहा है। "

अक्षय ऊर्जा बाजारों की गतिशील प्रकृति, तकनीकी प्रगति और निरंतर लागत में कटौती के साथ पिछले दशक के दौरान ध्यान केंद्रित करने की तुलना में इरेडा, एक बहुत ही अलग परिप्रेक्ष्य के साथ भविष्य को देख रही है। "पवन और सौर क्षेत्रों की भारी सफलता को देखते हुए इन क्षेत्रों में सार्वजनिक और निजी दोनों तरह के निवेश के रूप में निवेश में वृद्धि हुई है। सार्वजनिक और निजी क्षेत्र में और अधिक से अधिक बैंकों और वित्तीय संस्थानों के साथ-साथ विदेशी लेंडर भी इन क्षेत्रों में निवेश कर रहे हैं। पवन और सौर आज के सबसे तेजी से बढ़ते अक्षय ऊर्जा क्षेत्र हैं और इरेडा के पोर्टफोलियो के लिए भी ये सबसे बड़े अंशदाता हैं । "

सीएमडी महोदय कहते हैं, “बाजार की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए इरेडा द्वारा कई नई और अभिनव योजनाएं बनाई गई हैं और बाजार की आवश्यकताओं के अनुसार सभी प्रौद्योगिकियों को कवर करने वाले व्यावसायिक रूप से व्यवहार्य नवीकरणीय ऊर्जा परियोजनाओं के वित्तपोषण में अपने एक्सपोजर के संबंध में हम लचीले हैं ।"

पिछले दो वर्षों में इस क्षेत्र में विदेशी निवेशकों की रुचि में काफी वृद्धि हुई है। सरकार अक्षय ऊर्जा क्षेत्र में 100 प्रतिशत एफडीआई को अनुमति देते हुए, नवीकरणीय ऊर्जा विकास और परिनियोजन के लिए अनुकूल नीतियों के साथ विदेशी निवेश को प्रोत्साहित कर रही है ।

RE-INVEST 2015 की पहल के हिस्से के रूप में, 17 वैश्विक कंपनियां अगले पांच वर्षों में 67 गीगावाट की नवीकरणीय ऊर्जा आधारित ऊर्जा परियोजना स्थापित करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। जेआईसीए, एडीबी, आईएफसी, वर्ल्ड बैंक आदि जैसे द्विपक्षीय और बहुपक्षीय एजेंसियां भारत में अक्षय क्षेत्र में प्रत्यक्ष रूप से परियोजनाएं ले रही हैं या विभिन्न बैंकों और एनबीएफसी के साथ क्रेडिट की सीमाओं के माध्यम से अपने निवेश को बढ़ा रही हैं। "यह भारत की आरई नीतियों, विनियामक ढांचा और आरई विकास के लिए अनुकूल वातावरण में अपना विश्वास दिखाता है," सीएमडी महोदय ने कहा ।

इरेडा द्विपक्षीय और बहुपक्षीय स्टेकहोल्डरों के साथ मिलकर काम कर रहा है और अब बिना किसी संप्रभु गारंटी के संसाधनों को जुटाया है । देश में आरई इंफ्रास्ट्रक्चर के लिए वित्तपोषण बढ़ाने हेतु सरकार 1-1.5 अरब डॉलर के फंड के साथ भारतीय अक्षय ऊर्जा कोष के निर्माण का प्रस्ताव भी दे रही है।

प्रधानमंत्री के डिजिटल भारत के विज़न के साथ में, इरेडा ने अपनी व्यावसायिक प्रक्रियाओं की परिचालन क्षमता बढ़ाने के लिए सूचना प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल किया है और अपने विभिन्न विभागों और कार्यों से संबंधित सभी कार्यकलापों में आईटी उपकरण और अनुप्रयोगों को शामिल किया है ताकि गुणवत्ता सेवा को बाहरी रूप से भी प्रदान किया जा सके। आंतरिक रूप से पूरे व्यापारिक मूल्य श्रृंखला को अत्याधुनिक सॉफ्टवेयर अनुप्रयोगों का उपयोग करके आईटी प्रणालियों के साथ मैप किया गया है। एक सुरक्षित पर्यावरण के साथ ईआरपी मंच पर ऋण प्रबंधन प्रणाली और ऋण लेखा प्रणाली विकसित की गई है। संपूर्ण परियोजना ऋण आवेदन प्रसंस्करण एक आईटी मंच के माध्यम से किया जाता है जो इरेडा को अपने ग्राहकों को त्वरित सेवाएं प्रदान करने में सक्षम बनाता है जिससे ग्राहकों की संतुष्टि को सर्वोच्चता के साथ सुनिश्चित किया जा सके।

"हाल ही में, इरेडा ने अपने भुगतान और भुगतान के विवरण के लिए इरेडा विक्रेताओं और परियोजना डेवलपर्स को सुविधाजनक बनाने के लिए विक्रेता भुगतान और पवन और सौर उत्पादन आधारित प्रोत्साहन के लिए मोबाइल एप्लिकेशन लॉन्च किया है", सीएमडी महोदय बताते हैं ।

इरेडा की सफलता और घातीय वृद्धि की गति इसके प्रभावशाली आंकड़ों से देखी जा सकती है। वर्ष 2007-08 में ऋण की मंजूरी से 826 करोड़ रुपए से 31 फीसदी के सीआईजीआर के साथ वर्ष 2016-17 में 10199 करोड़ की वृद्धि हुई है और 2017-18 में 13000 करोड़ रुपए की ऋण मंजूरी की उम्मीद की जा रही है । वर्ष 2007-08 में ऋण मंजूरी 553 करोड़ रुपए से बढ़कर वर्ष 2016-17 में 6,593 करोड़ होने के साथ ऋण मंजूरी ने 30 प्रतिशत की सीएजीआर के साथ यह मुख्य भूमिका निभाई है और वित्तीय वर्ष 2017-18 में 8,000 करोड़ रुपए के ऊपर जाने की हर संभावना है । कर पश्चात लाभ वर्ष 2007-08 में 47.96 करोड़ रुपए से बढ़कर वर्ष 2016-17 में 365.02 करोड़ रुपए के साथ कंपनी के मुनाफे में भी ग्रोथ दिखाई दे रही है ।

हम "ग्रो टुगेदर" फिलासफ़ी का पालन करते हैं । हम ऋण के लिए सबसे प्रतिस्पर्धी शर्तों की पेशकश करते हैं और इस परियोजना के एक कठोर मूल्यांकन को पूरा करते हैं, परियोजना के सफल कार्यान्वयन और संचालन को भी सुनिश्चित करते हैं। इससे डेवलपर और इरेडा दोनों के लिए एक लाभप्रद स्थिति पैदा होती है।

सीएमडी ने कहा कि इरेडा के प्रयासों को जोड़ने के लिए एक जिम्मेदार कॉर्पोरेट नागरिक के रूप में कार्य करना है जो समाजिक जीवन की गुणवत्ता में सुधार के लिए बड़े पैमाने पर काम करना है। हमारे सीएसआर और सस्टेनिबिलिटी का जोर समुदाय के विकास, शिक्षा, स्वास्थ्य देखभाल और स्वच्छता, पर्यावरण संरक्षण, हरित और ऊर्जा कुशल प्रौद्योगिकियों के साथ-साथ पिछड़े क्षेत्रों और आपदा प्रबंधन के विकास के माध्यम से समुदायों के सशक्तिकरण पर है।

भारत में बिजली की मांग बढ़ने के साथ-साथ, इरेडा भारत की अक्षय ऊर्जा गाथा के मामले में स्वयं को सब से आगे देखने के लिए उत्सुक है।

■ डॉ. पी. श्रीनिवासन
महाप्रबंधक (मा.सं.)
इरेडा लि.

आज ग्राहकों के पास चयन करने का व्यापक विकल्प है । उत्पाद उनके विनिर्देशों के अनुरूप होने चाहिए और इसके साथ-साथ उनके बजट में भी । आज, केवल विनिर्माण ही नहीं अपितु सेवा, सरकारी और गैर-लाभ वाले क्षेत्र भी कड़ी प्रतिस्पर्धा का सामना कर रहे हैं । नई सूचना अर्थव्यवस्था में सभी संगठनों के सभी रैंकों में स्वतंत्र उद्‌यमशीलता और पहल की आवश्यकता है । इस महा प्रतिस्पर्धात्मक विश्व में, किसी संगठन से जुड़ाव अब केवल एक तरफा मामला (वन-वे स्ट्रीट) नहीं है ।

हम जो अपेक्षा करते हैं वो है "समग्र रूप से कार्य-निर्वाह क्षमता", **कौशल** (संप्रेषण, नेतृत्व, निषेध...) और **मूल्य** । मूल्य हमारे निर्माण से संबंधित होते हैं जबकि कौशल हमारे कार्य से । यह समझना महत्वपूर्ण है कि कार्य **हो जाने की** गुणवत्ता का फलन है जिसकी खोज में हम हैं । लेकिन जागृत होकर इसकी खोज की जानी चाहिए । मूल्य रहित कौशल धरातल पर नहीं टिकता । महाभारत की एक कथा "वैल्यू गैप" का निरूपण करती है । द्रोणाचार्य पांडवों एवं कौरवों के शस्त्र विद्‌या के गुरु थे । विद्‌या प्रशिक्षण के अंत में, उन्होंने एक समारोह आयोजित किया । अर्जुन को सर्वश्रेष्ठ शिष्य माना गया और द्रोणाचार्य ने उन्हें सबसे शक्तिशाली शस्त्र ब्रह्मास्त्र प्रदान किया । अश्वत्थामा भागते हुए उनके पास आया और ब्रह्मास्त्र की मांग की । यद्‌यपि द्रोणाचार्य निष्पक्ष गुरु थे, फिर भी एक भावुक पिता सिद्‌ध हुए । महाभारत के अंत में इसका परिणाम त्रासद रहा क्योंकि मूल्य उसके कौशल से मेल नहीं खा रहे थे । ज्ञान और कौशल को प्राप्त करना एक पक्ष है और उसे प्रखर रखना/पैना करना दूसरा ।

विश्व-समाज का नया वर्ग प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण से परे है । ऐसी चुनौतियों के अनुरूप अपने पेशेवर ज्ञान और कौशल को अद्‌यतन रखना आवश्यक है । हमें ज्ञान प्राप्त करने के लिए सीखना चाहिए । यह सुधार की निरंतर यात्रा होनी चाहिए । अनुसरण सुधार के प्रति परिवर्तन लाता है । यह समान रूप से महत्वपूर्ण है कि हमारे आस-पास हो रहे परिवर्तन का पर्यवेक्षण किया जाए । परिवर्तन स्थायी है ।

परिवर्तने शाश्वतम्

जैसा कि मनुस्मृति में लिखा है, परिवर्तन मनुष्य के लिए प्रकृति की सबसे बड़ी चुनौती है, उनको सम्मानित करती है जो परिवर्तन को स्वीकारते हैं और उन्हें दंड देती है जो इसका विरोध करते हैं । परिवर्तन के स्वरूप की सामान्य धारणा को समझने से कुछ व्यक्ति और कम्पनियां ऊचाइंयों तक पहुंच गई हैं । डॉ. स्पेंसर जॉनसन की पुस्तक "हू मूव्ड माई चीज/Who Moved My Cheese" में इसको चार किरदारों के जरिए बहुत सुंदर तरीके से चित्रित किया गया है । **"स्निफ"** और **"स्करी"** नाम के दो चूहे होते हैं और दो छोटे व्यक्ति हैं जिनका नाम **"हेम"** और **"हाव"** है, जो चूहों के आकार के हैं लेकिन ज्यादातर लोगों जैसा बर्ताव करते हैं । **"चीज"** - पनीर एक रूपक है जो आप अपने जीवन में प्राप्त करना चाहते हैं - नौकरी, संबंध, स्वास्थ्य, सुकून इत्यादि । और **"मेज़"** - **भूल-भुलैया** जहां आप इसकी तलाश करते रहते हैं । कहानी बताती है कि जब चीज यानि पनीर को एक दिन भूल-भुलैया के दूसरे हिस्सों में रख दिया जाता है तो किरदारों पर क्या गुजरती है । कुछ तो इसके लिए तैयार रहते हैं और कामयाब होते हैं । जबकि अन्य चकित रह जाते हैं और उन्हें मुश्किल दौर से गुजरना पड़ता है । **"हाव"** आगे बढ़ जाता है और उसे **"नया चीज"** - नया पनीर मिल जाता है जबकि **"हेम"** अपने सुख-साधन में पीछे रह जाता है और डर जाता है । जैसा कि हाव भूल-भुलैया से गुजरते हुए उसकी दीवारों पर लिखता जाता है जो कुछ भी उसने सीखा था, उम्मीद करते हुए कि उसका मित्र **हेम** इसे पढ़कर अपना रास्ता खोज लेगा । कहानी हाव को यह एहसास कराते हुए समाप्त होती है कि जब आप दीवारों पर लिखे हुए को पढ़ सकते हैं, तो आप बदलाव में भी कामयाब हो सकते हैं ।

व्यक्तिगत नज़रिए से यदि ऊपर लिखी बातों पर सावधानी रखी जाती है तभी संगठन अपने अस्तित्व (Survival) और विकास (Growth) हेतु चुनौतियों से निपटने के लिए स्वयं को परिवर्तित कर पाएगा । परिवर्तन पर अग्र-सक्रिय होकर, प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण में भी विजेता के रूप में उभरकर आना संभव है ।

पर्यावरण सुरक्षा

प्रकृति का न करें हरण
आओ बचाएं पर्यावरण

माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी जी द्वारा 2 अक्तूबर, 2014 से चलाया जा रहा 'स्वच्छ भारत अभियान' स्वच्छ पर्यावरण की दिशा में भी एक सार्थक व सराहनीय कदम है।

आइए सबसे पहले तो यह जाने कि पर्यावरण है क्या? वे सभी प्राकृतिक तत्व जो हमारी पृथ्वी पर जीवन संभव बनाते हैं एवं उसे पोषित करते हैं पर्यावरण के अंतर्गत आते हैं। ये तत्व हैं – भूमि, जल, वायु, अग्नि, प्रकाश, वन, पशु-पक्षी इत्यादि। पूरे ब्रह्माण्ड में पृथ्वी ही एक ऐसा ग्रह है जिसमें जीवन के अस्तित्व को बनाए रखने के लिए आवश्यक पर्यावरण उपलब्ध है।

हमारा देश विश्व के सर्वाधिक जनसंख्या वाले देशों के बीच दूसरा स्थान रखता है। इसकी विशाल जनसंख्या जहां इसको कई समस्याओं से निजात दिलाती है वहीं कई समस्याएं उत्पन्न हो रही हैं जैसे कि 'पर्यावरण सुरक्षा'। जिस पर्यावरण में हम रहते हैं वह बड़ी तेजी से दूषित होता जा रहा है। अत: आवश्यकता इस बात की है कि हम अपने पर्यावरण की देखरेख और संरक्षण सही तरीके से करें। हमारे देश में तो प्राचीन काल से ही पर्यावरण को बचाने के लिए भारतीय माताओं ने पीपल को पूजनीय मानकर अटल सुहाग से जोड़ा है तथा वटवृक्ष से जुड़ा वट सावित्री व्रत हमारे अटूट विश्वास का हिस्सा है। आंवला पूजन हमारे जीवन में आरोग्य का प्रतीक है। तुलसी को हम ईश्वर को समर्पित कर प्रसाद के रूप में दैविक गुणों से परिपूर्ण मानते हैं व तुलसी की पूजा तक करते हैं और यह सच्चाई भी है कि संपूर्ण प्रकृति से हमें बहुत से औषधीय लाभ भी प्राप्त होते हैं।

पर्यावरण की सुरक्षा के लिए हमें कुछ उपाय करने होंगे जिससे कि हमारे पूर्वजों से हमें मिला है उसका आधा भी यदि हम आने वाली पीढ़ी को लौटा सकें तो हमारा सौभाग्य होगा । जो हम उपाय कर सकते हैं उनमें से कुछ इस प्रकार हैं :

1. **वनों की कटाई रोककर और अधिक से अधिक वृक्ष लगाकर :** यदि हम अपने बच्चों के हर जन्मदिन पर एक भी पेड़ लगाने का सोचें तो देखेंगे कि चारों तरफ कितनी हरियाली हो जाएगी । इससे पर्यावरण सुरक्षा में काफी मदद मिलेगी ।
2. **कारखानों व यातायात के साधनों से उत्सर्जित होने वाली विषैली गैसों पर नियंत्रण रखें:** हर राज्य सरकार तथा केंद्र सरकार को प्रदूषण मुक्त वाहनों को ही सड़कों पर चलने दें । साथ ही हम सभी भी सोचें कि हम कम से कम अपने निजी वाहनों का प्रयोग करें। थोड़ी दूरी के लिए हम पैदल ही चलें।

3. **कुओं, तालाबों व नदियों को साफ रखें :** अपनी पुरानी मान्यताओं को छोड़े तथा अपने रीति-रिवाजों के मुताबिक गंदगी न डालें ।
4. प्रदूषण फैलाने वाले व्यक्तियों व संस्थाओं को दंडित किया जाए।
5. प्रतिवर्ष विश्व पर्यावरण दिवस 5 जून, को विशेष कार्यक्रम आयोजित कर नागरिकों को पर्यावरण-संरक्षण एवं उससे स्वास्थ्य प्रभाव की जानकारी दें।
6. दूरदर्शन, समाचार-पत्रों आदि से जन-जागृति उत्पन्न की जाए।

एक अनुसंधान के अनुसार भूमि, वायु व जल-प्रदूषण के कारण हमारे देश में प्रतिदिन लगभग 150 व्यक्तियों की अकाल मृत्यु होती है एवं सैकड़ों लोग भयंकर रोगों से ग्रस्त हो जाते हैं। अभी पिछले दिनों सुन रहे थे कि हवा में पता नहीं क्या है कि सैकड़ों लोग चिकनगुनिया व अन्य कई बीमारियों से इतने ग्रस्त हो गए थे कि अस्पतालों में भी जगह नहीं थी। ये सब दूषित पर्यावरण के ही दुष्प्रभाव हैं।

पर्यावरण सुरक्षा में ही हमारा विकास है। हमें हर हाल में अपने पर्यावरण की रक्षा करनी है। प्रकृति हमें इतना कुछ देती है तो हमारा भी कर्तव्य है कि हम भी पर्यावरण सुरक्षा को अपना धर्म मानें और इसे सहेज कर रखें।

पीढ़ी-दर-पीढ़ी याद रखें, जीवन की जरूरी बातें।
कुदरत की बनाई चीजें सब, मानव के लिए हैं सौगातें ।।

■ भूपिंद्र कौर
मुख्य कार्यालय प्रबंधक
कारपोरेट कार्यालय, एमएमटीसी लिमिटेड

"मनुष्य अपने विश्वास से निर्मित होता है। जैसा वो विश्वास करता है, वैसा वो बन जाता है।"
■ **श्रीमद्भगवद्गीता**

असीरगढ़

■ डॉ स्वाति तिवारी
EN-1/9 चार इमली, भोपाल

दुर्ग शब्द का तात्पर्य है ऐसा गढ़ जहाँ पहुँचना कठिन हो। याज्ञवल्क्य ने कहा की दुर्ग से राजा और प्रजा की सुरक्षा, स्थिति और सामर्थ्य ज्ञात होती थी। लेकिन साथ में यह भी कहा जाता है की किसी दुर्ग की कहानी, महज किसी राजा और रानी की कहानी नहीं होती । ऐसी ना जाने कितनी कथाएं, किस्से और किवदंतियां है जो हमारे इतिहास से निकलती हैं या हमारे इतिहास में जमा हैं। सच यही है की ये मानव - सभ्यता के विकास या पतन की कहानियां होती हैं। हजारों दुर्ग अपने अपने इतिहास के साथ अपनी एक कहानी लिए आज भी खड़े हैं। कौटिल्य ने दुर्गों के चार मुख्य प्रकार बताए जबकि मनु ने दुर्ग के छः प्रकार बताए हैं, पर किसी ने भी रहस्यमय दुर्ग का कोई प्रकार नहीं बताया।

मध्य प्रदेश के महाराष्ट्र की सीमा से लगे निमाड़ में प्राचीन असीरगढ़ के किले में कौटिल्य और मनु के बताये दुर्ग शैली का समावेश तो है ही पर इस किले से जुडी किवदंतियां और लोककथाएं आज भी इसे रहस्यमयी दुर्ग बनाती हैं और लोगों की जुबान पर यह किला अलग अंदाज में आज भी आता है । निमाड़ का वह इलाका जहाँ उबड़ खाबड़ जमीन के बीच ज्वार की रोटी और अम्बाडी की भाजी की सौंधी-सी महक आपमें खाने की इच्छा जगाती है। जहाँ भरी दोपहर की गर्मी को प्याज और हरी मिर्च खाकर कम किया जाता है उस निमाड़ का अपना एक सांस्कृतिक पक्ष है- एक लोक जीवन है।

इसी लोक संस्कृति में एक लोक कथा प्रचलित है, कहते है की निमाड़ के जंगलों में अश्वत्थामा आज भी अपनी पीड़ा के साथ भटक रहा है। असीर गढ़ का जंगल आज तक महाभारत कालीन अजेय योद्धा अश्वत्थामा को संरक्षण दिए हुए है जो आज भी असीर गढ़ के किले में घुमता रहता है। निमाड़ में यह भी किवदंती है की जब भी किसी ने अश्वत्थामा को देखा है वह अपना मानसिक संतुलन खो देता है। इसका कारण मेरी समझ से शायद उसकी पीड़ा, उसकी अभिशप्त जिंदगी की कल्पना ही होती होगी ।

बचपन में सुनी "अश्वत्थामा मारा गया" की कथा का अंत भी असीरगढ़ की ओर ले जाता है। पिता से सुनी और स्मृति में कहीं धुंधली पड़ी यह कथा खंडवा-बुरहानपुर की एक अनायास बनी यात्रा के वक्त फिर स्मृति पटल पर चमकने लगी और असीर गढ़ की ओर आकर्षित करने लगी थी। उस यात्रा का पड़ाव बना खंडवा-बुरहानपुर के मध्य असीरगढ़ रोड रेलवे स्टेशन। यहाँ से लगभग १२ किलोमीटर दूर सतपुड़ा पर्वतमाला के एक शिखर पर रहस्यमयी दुर्ग बना हुआ है । यह दुर्ग चंदानी रेलवे स्टेशन से १२ किलोमीटर की दूरी पर है । सतपुड़ा के सघन जंगलों के बीच से होकर असीरगढ़ दुर्ग पहुँचना होता है। जंगल में वीरानी इतनी की हवा की सायं-सायं सुनी जा सकती है, गर्मी इतनी की पसीने से कपड़े चिपकने लगते हैं और सूखे पतझड़ी वनों

के बीच से पत्तों पर चलते हुए पत्तों की खड़-खड़ाहट एक भय मिश्रित रोमांच पैदा करती है ।

निमाड़ की गर्म हवा के थपेड़े उनकी पत्तों से सरसराहट यह अहसास दिलाती है कि कहीं कोई है, शायद हमारे कदमों के निशानों पर अपने कदम रखता हुआ हमारे पीछे चल रहा है। एक पल को यह ख्याल की कहीं कोई अनजानी रूह या अश्वत्थामा तो नहीं ? भय का इतना रोमांचक अहसास की पलट कर देखना भी जरुरी लगे और देखते हुए एक भय आपको कंपकंपा भी दे। पर पलटने पर कोई नहीं दिखाई देता, शायद कोई परिंदा भी नहीं, बस एक वहम हमारे साथ चलता है की इस जंगल में एक अभिशप्त भटक रहा है, कौन जाने वो कहाँ टकरा जाए। मन आपको बार-बार चेतावनी देता हुआ सा डरता है की वापस चलाना चाहिए। किन्तु जिज्ञासा भरा मन किले की कथा, दुर्ग का शिल्प, अश्वत्थामा का इतिहास, जंगल की यात्रा और दूर दूर तक फैली वीरानी - विराट प्रकृति का अनूठा आकर्षण पलटने भी नहीं देता । यही वो मानवीय जिज्ञासा का चरम बिंदु होता होगा जो आदमी को चाँद की सैर से लेकर समुन्दर की गर्त तक ख़ाक छानने को मजबूर करता होगा। कदम से कदम मिलाती वह सरसराहट बस एक वहम ही है जो कथाओं से उपजे भय का परिणाम हो सकती है हम चलते जाते है एक जिज्ञासा से लदे हुए की राजाओं को भी दुर्ग बनाने के लिए यही जगह क्यों सूझी होगी। और एक प्रश्न मन में बार-बार आता है की जहाँ एक आबादी की रक्षा का इतना प्रबंध था वहां आज इतनी वीरानी क्यों ?

मुझे रोमांचक यात्राओं का अजीब शौक है जो मुझे और मेरे परिवार को घुमक्कड़ बनाता रहा है, फिर वह असीर का दुर्ग हो या सिरवेल की गहरे कुंए में उतरनेवाली गुफा यात्रा ही क्यों ना हो अक्सर हम यात्रा से लौट कर सोचते है हमने जान जोखिम में डाली थी ।

सतपुडा के जंगल की रोमांचक यात्रा का लुफ्त लेते हुए १२-१३ किलोमीटर का यह थका देनेवाला रास्ता तय होता है जो हमें खड़ा कर देता है दक्षिण द्वार पर। इतिहास में इसे दक्षिण की कुंजी [किला दक्खन] कहा गया है। इतिहास कहता है दक्षिण भारत पर विजय पाने के लिए पहले इसी असीर गढ़ को जीतना जरुरी होता था। तो इसका अर्थ निकालती हूँ मैं कि यह उत्तर और दक्षिण के बीच एक बिंदु है जिसके इस या उस पार जाने के लिए इसे लांघना एक चुनौती रहा होगा। बहरहाल एक विचार मन में कौंधता है कि अश्वत्थामा ने भी क्या जगह चुनी थी अपने लिए ? लगा शायद सदियों तक अभिशप्त जीवन के लिए इससे बेहतर वीराना कहीं है ही नहीं ? भूमितल से इसकी उंचाई 300 मीटर और समुद्र तल से इसकी ऊंचाई 761 मीटर है। दुर्ग की उंचाई को लेकर एक दन्त कथा और है कि हिजरी संवत 866 में मोहम्मद खिलजी ने युद्ध के लिए असीरगढ़ के जंगलों में डेरा डाला था तो रात में नींद खुलने पर उसने अपने गुलाम को आवाज दी और वज़ू के लिए पानी माँगा। तब गुलाम ने बताया कि अभी सुबह नहीं हुई है सरकार, “आप जिसे भोर का तारा समझ रहे हो वह तो असीर गढ़ किले के अन्दर रात में जलने वाला चिराग है।“ कहते हैं कि किले की ऊंचाई देख कर ही बिना आक्रमण किए मोहम्मद खिलजी वापस चला गया था ।

आज की स्थिति में दुर्ग यद्दपि खँडहर ही कहा जाना चाहिए पर दुर्ग की इमारत को देख कर बुलंदी को महसूस किया जा सकता है उत्तर भारत को दक्षिण भारत से जोड़नेवाले प्राचीन मार्ग पर स्थित यह दुर्ग सबसे ऊँचे और शक्तिशाली दुर्गों में से एक है । दरअसल असीरगढ़ का किला केवल किला नहीं है । यहाँ तीन किलेबंदियाँ है । सबसे ऊँचे किले का नाम असीरगढ़, बीचवाले का नाम कमर गढ़ । और सबसे निचे मैदान वाले किले का नाम मलय गढ़ है । पूर्व से पश्चिम तक किले की लम्बाई और चौड़ाई क्रमशः सवा और एक किलोमीटर के लगभग है । असीरगढ़ 1000 मीटर लम्बा और 600 मीटर चौड़ा है । लगभग 8०-85 एकड़ जमींन एक मजबूत परकोटे से घिरी हुई है । चट्टानी प्राचीर लगभग 40 मीटर ऊँची है । दक्षिणी भाग में भयावह ढलान है । चट्टानों की इस लम्बी ढलान के कारण दुर्ग में जाने का मार्ग पूर्व और उत्तर में है । दूसरी पहाड़ी पर कमरगढ़ है, यह किला फारुखी सुलतान आदिलशाह ने बनवाया था । कमर गढ़ और असीर गढ़ को जोड़ने के लिए दस मीटर ऊँची एक दिवार है, यंही पर एक प्रशस्ति लगी है जो अकबर, दानियल और शाहजहाँ के द्वारा दुर्ग फतह का प्रमाण है । चट्टान के पास ही एक बड़ा-सा दरवाजा है जो राजा गोपालदास ने बनवाया था टेढ़े-मेढ़े रास्तो से होते हुए सात दरवाजे पार करने के बाद मुख्य दरवाजा आता है । यूँ आप चाहें तो दक्षिण की तरफ से जीप द्वारा जा सकते है पर तब भी थोड़ा सा रास्ता तो पैदल ही पार करना पडता है । नया अनुभव ना होना क्योंकि तब आपको नहीं मिलेगा जंगल का रोमांच और पत्तों की सरसराहट, निमाड़ी गर्मी और खुद के पसीने की गंध, यात्रा के इस रोमांच से आप वंचित रह जाते है इसलिए जो लोग जंगल का मजा लेना चाहते है उन्हें इसी रास्ते से मजा आयगा फिर एक और आकर्षण क्या पता अश्वत्थामा कहीं किसी पेड़ के निचे विश्राम करता दिख जाय, अपने रिसते घाव को सहलाता तालाब के शीतल जल में अपनी प्यास बुछाता अपने अनंतकाल से रिस रहे श्रापग्रस्त घाव को घोता । ओह अश्वत्थामा तुम्हें खोजने बार-बार जंगल का रास्ता तय करना पड़े तो भी मेरा मन तुम्हारे दर्द को बांटना चाहता है । तुम्हारी मुक्ति का कोई उपाय खोजने की इच्छा है, यह भी कोई सजा है श्राप देते हुए क्या तुम्हारी युगों युगों की पीड़ा उन्होंने एक बार भी महसूस नहीं की थी ? मन कहेगा आपका की एक बार अश्वत्थामा को हम इन्हीं निमाड़ी सतपुड़ा के जंगल से निकाल सकें उसे नए युग के नए ज़माने में नया जीवन जीना सिखा सकें ? उसके घाव का कोई तो इलाज होगा इस नए ज़माने के पास ? मेरी तरह खोये हुए आप भी इसी चिंतन के साथ जब जंगल से गुजरे तो जीवन का नया दर्शन समझ सकते है, रास्ता हमेशा कठिन ही चुनना चाहिए क्योंकि तभी तो जीवन के अर्थ पता चलते है ।

एक इतिहासकार ने इन रास्तों को लेकर लिखा है कि इसमें प्रवेश और निकासी के रास्ते खोजपाना दुष्कर है । आसपास कोई दुसरी पहाड़ी नहीं है, जहाँ से इस किले पर नजर रखी जा सके । जमीं पर खड़े होकर आप देखते हैं कि यह किला आसमान के रास्ते, बीच आधे पर नजर आता है, ऊँगली स्वतः दांतों के नीचे चली जाती है। आश्चर्य होता है इस कल्पना पर कि आखिर आसमान और धरती बीच किला बनाया कैसे होगा ? वो कौन वास्तुशास्त्री होगा ? आप उसे सलाम किए बिना नहीं रह पायेंगे।

किले की चोटी पर मस्जिद बनी है। मस्जिद के शिलालेख पर अरबी में फारुखी बादशाहों की नामावली है। एक ऊँची सी बैठक पर इबादत खाना बना है जिसके एक खम्बे पर अकबर की प्रशस्ति है। असीरगढ़ यूँ तो सघन जंगल में है, लेकिन यहाँ तालाबों और कुओं-बावड़ियों की संख्या हैरत में डालती है। जो यह बताती है कि कभी यहाँ आबादी भरपूर रही होगी। यहाँ पेयजल की उपलब्धता है। आश्चर्य होता है कि जहाँ गर्मी इतनी की हिरण काले पड़ जाते हैं, आदमी बेदम हो जाते हैं, वहां इन जल स्रोतों में शीतल जल कैसे भरा हुआ ?

इतिहासकार फ़रिश्ता ने इस किले को आठवीं सदी में आसा अहीर द्वारा निर्मित कराया जाना लिखा है । संभव है कि उसी नाम का अपभ्रंश असीर हुआ हो और यह असीरगढ़ कहलाता हो। यहाँ आसा अहीर के वंशजों का ७०० सालों तक शासन रहा है, इतिहास में उल्लेख है की एक आक्रमण में चितौड़ की सेना की सहायता के लिए असीरगढ़ से सेना गई थी। अलाउद्दीन खिलजी ने सन 1295 में देवगिरी से लौटते हुए असीरगढ़ पर विजय प्राप्त की थी। सन 1400 में आसा अहीर के वंशजों से फारुखी बादशाह नासीर खान ने किला छीना था। 200 सालों तक फिर यहाँ फारुखी शासन रहा जिन्होंने किले को और भव्यता और सुरक्षा दी। सन 1601 में आठ माह की घेराबंदी के बाद अकबर बादशाह ने सैनिकों को रिश्वत देकर किले पर कब्जा किया था। क्या शानदार इतिहास है किले का और क्या विराटता ? क्या है किसी देश के पास ऐसा गौरवान्वित करता असीरगढ़ और उसकी शान के अनुरूप ऐसा इतिहास ?

दुर्ग, किले, गढ़ महल और दुमहले सब राज्य शक्ति के प्रतीक हैं जिनके अन्दर तमाम इतिहास सोया हुआ है जहाँ जाने कितने राजे-रजवाड़े, नवाब-शेख, बादशाह अपने-अपने अतीत के साथ दफ़न है, जिनकी कथाएं इतिहास की वो कथाएं है जिनसे छल-प्रपंच, युद्ध और व्यूह नीति और कौशल को सीखा जा सकता है पर ये किला और इसके जंगल किसी राजे-महाराजे की नहीं ये बल्कि उसकी किवदंती कहते हैं जो सदियों से ज़िंदा है, द्वापर युग में जन्मे एक श्रेष्ठ योद्धा की जो अपने पिता की भाँति शास्त्र-शस्त्र विद्या में निपुण थे । पिता-पुत्र की इस जोड़ी ने महांभारत के युद्ध में पांडवों की सेना को लोहे के चने चबवा दिए थे । हाँ, महाभारत के कई प्रमुख पात्रों में से एक अश्वत्थामा आज भी जिन्दा है । कहते है उनका वजूद इन्ही जंगलो में आज भी है । महाभारत में गुरु द्रोणाचार्य के पुत्र व कुरुवंश के राजगुरु कृपाचार्य के भांजे अश्वत्थामा हजारों सालो से जिन्दा है जिसे मुक्त करने फिर कोई अवतार पैदा नहीं हुआ, होगा कभी न कभी पर अभी तो वह भोग रहा है श्राप । अपने पिता की मृत्यु का बदला लेने निकले अश्वत्थामा को उनकी एक चूक भारी पड़ी और भगवान् श्री कृष्ण ने उन्हें युगों-युगों तक भटकने का श्राप दे दिया। ओह ! अश्वत्थामा यह श्राप क्यों ? और वह भी भगवान कहलाने वाले कृष्ण का ? ईश्वर तो मुक्ति देते हैं। ये कैसे इश्वर थे ? तुम भोग चुके हो श्राप और वे शिव कहाँ है ? जिन्हें तुम पांच हजार सालों से पूज रहे हो। कब तक देवालयों में सोते रहेंगे ? कब जागेंगे तुम्हें मुक्ति देने के लिए ? अश्वत्थामा को मुक्ति दे दो देव, इंतिहा हो गई उसकी सजा की ।

दुर्ग के अंदर राजपूत शैली में विक्रमादित्य द्वारा निर्मित एक शिवालय है जो पहाड़ी से घिरे तालाब के किनारे स्थित है । यह मंदिर ही उस रहस्य को निर्मित करता है जो तुम्हारे जिन्दा होने की पुष्टि करता है अश्वत्थामा । माना जाता है कि महाभारत का अभिशप्त युद्ध नायक अश्वत्थामा इन्ही जंगलों में शिरोपीड़ा लिए भटक रहा है । वह रोज इसी शिवमंदिर में शिव पूजन के लिए आता है । जनश्रुति है कि महाभारत के युद्ध के बाद पांडव पुत्रों को मारने और अश्वत्थामा से मणि छीन लिए जाने के बाद दर्द और असहनीय शिरोपीड़ा से व्याकुल भयभीत होकर वह खंडवा-बुरहानपुर के बीच असीरगढ़ के जगंलो में भटकता है । इसीलिए इस मंदिर को अश्वत्थामा मंदिर कहते हैं । ताप्ति महात्म्य में भी इसका जिक्र आता है ।

स्थानीय लोग कहते हैं कि शिव मंदिर में भोर होते ही कोई पूजा कर जाता है । शिवलिंग पर रोज ही ताजे फूल और गुलाल कोई चढ़ा जाता है । अपने संस्कारों से बंधा ब्राह्मण पुत्र अब भी देव पूजन की परंपरा चलायमान रखे हुए है । एक फिर सवाल कौंध जाता है मन में ब्राह्मण तो रावण भी था और तुम भी, फिर क्षत्रिय ने श्राप क्यों दिए ? राजा राम हों या कृष्ण, श्राप और मुक्ति की कहानियों के अधिष्टाता क्यों और कैसे ? नहीं जानती इसके पीछे क्या वजह रही होंगी, कभी-कभी लगता है की ब्राह्मणों की प्रज्ञा से वे भी भयभीत तो नहीं थे ।

यह तो जनश्रुति है पर सच यह है कि 16वीं सदी में असीरगढ़ किला संसार के आश्चर्यों में से एक गिना जाता था । सालों पहले असीरगढ़ की यात्रा याद करते हुए मन एक बार फिर असीरगढ़ के जंगलों में शिव मंदिर में बैठ उसकी मुक्ति की कामना करना चाहता है, ईश्वर मिले तो कहिए अश्वत्थामा को मुक्ति मिलनी चाहिए, आप ही ने कहा है न ! युद्ध में सब जायज है तो जो भी अश्वत्थामा ने किया वह भी तो युद्ध का ही हिस्सा रहा होगा । सजा भी एक सीमा तक ठीक होती है देवता कहलानेवाले श्री कृष्ण श्राप देकर भूल ही गए और यह भी की माफ़ करने वाला हमेशा बड़ा होता है-इसी जंगल में मंदिर के सामने खड़े होकर मै चिल्लाकर कहती हूँ -तो करो ना अब उसे मुक्त !

मन मेरे साथ नहीं लौटना चाहता । वह छूट रहा है इसी जंगल में । जहाँ कोई अकेला संकट में है सदियों से मुक्ति की कामना में भटकता हुआ ---- अश्वत्थामा तुम मिलने तो बाहर आओ, क्यों लोगों से छुपते हो ? हो सकता है तुम्हारे दर्द का इलाज़ किसी के पास हो। यह द्वापर युग नहीं है यह कलयुग है।

<u>न्यू ईयर पर कैशलेस डांस</u>

■ रेनु गुलाटी
वरि.प्रबन्धक (राजभाषा)
हिन्दुस्तान कॉपर लिमिटेड

31 दिसम्बर को जैसे ही घड़ी रात के 12 बजाती है, पूरी दुनिया अचानक जोर जोर से नाचने लगती है1 सबको पता होता है कि न्यू ईयर आनेवाला है, लेकिन 12 बजते ही लोग एक दूसरे के गले इस तरह जा लगते हैं जैसे अचानक कहीं से कोई ऐसा शुभ समाचार आया हो जिसकी सम्भावना ना थी, जो पहले से तय है उसे सरप्राइज बनाकर सेलिब्रेट करना इनसान का स्वभाव है1 उत्सवधर्मिता उसे ही कहते हैं1 साल जब आता है, गाजे बाजे के साथ उसका स्वागत होता है, लेकिन दिसम्बर आते आते उसकी हैसियत बिन बुलाए मेहमान सरीखी हो जाती है1 31 दिसम्बर की आधी रात को जो धूम धड़ाका होता है, उसे देखकर लगता है कि कुछ जगहों पर बुज़ुर्गों के मरने पर बैंड बजवाने की परम्परा यूं ही नहीं है1

साल 2016 के जाने पर भी बैंड पूरी दुनिया में जोर शोर से बजा1 अमीरों के जश्न अमीरोंवाले अन्दाज में मने, गरीबों का जलसा गरीबों की तरह हुआ1 दुनियाभर में साल्सा, पोल डांस, बेली डांस और टापलेस डांस हुआ1 भारत की जनता के न्यु ईयर सेलिब्रेशन का सबसे बड़ा आइटम कैशलेस डांस रहा1 सलमान खान के बेल्ट डांस और शाहरुख खान के लुंगी डांस के बाद कैशलेस डांस भारत में ईजाद हुई सबसे नई नृत्य शैली है जो लोकप्रियता के मामले में जाति, धर्म और उम्र की सारी सीमाएं तोड़ चुकी है1 देश की पूरी आबादी पर कैशलेस फीवर चढा हुआ है1 कैशलेस डांस भारत में नवम्बर में शुरू हुआ लेकिन देखते देखते इसने पॉपुलैरिटी के सारे रेकॉर्ड तोड़ दिये1 पब्लिक सारे काम धाम छोड़कर बस यही करने में जुट गई1 इसकी धुन इतनी प्यारी ठी कि 18 साल के नौजवान से लेकर 80 साल के बुज़ुर्ग तक थिरकने को मजबूर हो गए1 कई लोग तो नाचते नाचते मर ही गए, लेकिन नाच बन्द नहीं हुआ, बल्कि इसे लेकर दीवानगी बढती ही चली गई1 और तो और एक दिन 'पप्पू कांट डांस' वाला पप्पू तक नाचने पर आमादा हो गया1 कहते हैं कि अपनी बारी के इंतजार में लाईन में उसने घंटों बिताये1 नवंबर के बाद दिसम्बर में भी डांस बदस्तूर जारी था, फिर अचानक मीडिया के एक तबके में खबर उड़नी शुरू हुई कि इसकी लोकप्रियता अब उतार पर है और हो सकता है नया साल आते आते यह खत्म हो जाय1 कैशलेस डांस को प्रोमोट करनेवाले मायूस हो गए1

जिस डांस का अभ्यास वे महीनेभर से कर रहे हैं, उसे न्यू ईयर पर न कर पाएं तो क्या फायदा? लोगों ने सरकार से इसे जारी रखने की अपील की, लेकिन सरकार ने कहा कि "यह विशुद्ध रूप से एक सांस्कृतिक सवाल है1 नाचना या न नाचना जनता की इच्छा पर है, हम नचवाने वाले कौन होते हैं"? पब्लिक खुश हो गई है कि 'चलो अच्छा है, न्यू ईयर के रेंज में

भंग नहीं पडेगा1’ तो न्यू ईयर कैशलेस डांस कंनफर्म हो गया1 न्यू ईयर सेलेब्रेशन में मेरी शुरू से कोई खास रुचि नहीं है1 मैं शाम से हे टीवी से चिपका रहता हूं1 अचानक आधी रात को पत्नी ने ताना दिया - क्या नए साल के पहले दिन हम भूखे सोएंगे, कुछ पैसे वैसे का इंतजाम करो1” मैने उनसे कहा - “पिछले हफ्ते ही लेकर आया था1” उन्होंने जवाब दिया “ हफ्ता तो यूं ही गुजर जाता है, अब तो साल गुजरने को है1 जाओ कहीं से कुछ लेकर आओ1” बडे बेमन से घर से निकला1 चन्द कदम बढाए होंगे कि अचानक कदम ठिठक गए, न्यू ईयर सेलेब्रेशन बाकायदा एटीएम के बाहर चल रहा था1 दस बारह लोगों की टोली ठीक जो ‘हैप्पी न्यू ईयर’ गाती हुई ‘कैशलेस डांस’ कर रही थी1 मेरे कदम भी अपने आप उधर ही मुड़ गए और मैं भी सेलेब्रेशन में शामिल हो गया - ‘ जो है समां कल हो न हो’.

“शांति राजनैतिक या आर्थिक बदलाव से नहीं आ सकती बल्कि मानवीय स्वभाव में बदलाव से आ सकती है ।”

- एस. राधाकृष्णन

यात्रा संस्मरण

काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान (वर्ल्ड हेरिटेज)

वे जंगल जहाँ बरहमूथरी के पेड़ हैं और हैं एक सींग वाले गैंडे

■ डॉ. स्वाति तिवारी

असम के गर्व में से एक है काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान। यहाँ लुप्तप्राय भारतीय एक सींग वाले गैंडे का घर है और दुनिया में बाघों के सबसे अधिक घनत्व को समायोजित करते हुए, 2006 में इसे बाघ अभयारण्य के रूप में भी घोषित किया गया है। यह राष्ट्रीय उद्यान यूनेस्को द्वारा घोषित विश्व विरासत स्थल (वर्ल्ड हेरिटेज) भी है। यह पूरा जंगल क्षेत्र है जो लगभग ४२९.९३ कि.मी के वर्ग के क्षेत्र वाला एक बड़ा राष्ट्रीय उद्यान माना गया है। काजीरंगा असम के दो जिलों - गोलाघाट और नोआगाँव के अंतर्गत आता है। कहते हैं कि ईश्वर यदि इच्छाशक्ति देता है तो उसे पूरा करने के अवसर भी देता है मेरी घूमने की इच्छाशक्ति को ऐसा ही एक अवसर तब मिला जब हम दिल्ली में पोस्टेड थे। राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग की एक राष्ट्रीय संगोष्ठी में मुझे असम जाना था। संगोष्ठी गुवाहाटी में थी रुकने की बढ़िया व्यवस्था थी फ्लाईट की टिकिट थी और सबसे बड़े आकर्षण दो थे एक तो कामख्या देवी का मंदिर और दूसरा काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान । असम उत्तर पूर्वी भारत में एक राज्य है जो अन्य उत्तर पूर्वी भारतीय राज्यों से घिरा हुआ है। भारत का एक सरहदी राज्य, जिसे मैंने अभी तक नहीं देखा था। राष्ट्रीय मानव अधिकार आयोग ने असम में राष्ट्रीय संगोष्ठी का गुवाहाटी विश्वविद्यालय के साथ आयोजन किया, मेरे लिए यह एक अच्छा अवसर था उत्तर पूर्वी राज्यों को देखने का। हमारा परिवार घुमक्कड़, सभी साथ चलने के लिए तैयार, फटाफट प्रोग्राम बना बच्चों ने कहा सभी चलते हैं मम्मी की कांफ्रेंस के बाद काजीरंगा, शिलांग, मेघालय घूम लेंगे, एक साथ बहुत कुछ तय हो गया। गोष्ठी मानव अधिकार आयोग के अनुरूप शानदार रही। गुवाहाटी घूमने के लिए कांफ्रेंस के तीन दिन पर्याप्त थे। गोष्ठी के बाद हम कार टैक्सी से निकले ।

सबसे पहले हमें ब्रह्मपुत्र का पुल देखना था। ब्रह्मपुत्र को देख याद आया कि ब्रह्मपुत्र सिर्फ एक नदी नहीं है, पढ़ा था कहीं कि यह नद है अर्थात नदी का पुल्लिंग अर्थात् पुरुष रूप है। उससे भी महत्वपूर्ण यह है कि यह नद एक दर्शन है समन्वय का, इसके तटों पर कई सभ्यताओं और संस्कृतियों का मिलन हुआ है। आर्य-अनार्य, मंगोल-तिब्बती, बर्मी-द्रविड़, मुगल-आहोम संस्कृतियों की टकराहट और मिलन का गवाह ब्रह्मपुत्र रहा है। एक असमिया लोकगीत सुना था सांस्कृतिक कार्यक्रम में आसामी स्वर और शब्द बेहद मीठे थे, जो कुछ कुछ बंगालियों जैसे हैं, जिसका मुखड़ा मुझे याद था -

ब्रह्मपुत्र कानो ते, बरहमूखरी जूपी, आमी खरा लोरा जाई
ऊटूबाई नीनीबा, ब्रह्मपुत्र देवता, तामोल दी मनोता नाई।

इस लोक गीत में नायिका कहती है कि ब्रह्मपुत्र के किनारे बरहमूथरी के पेड़ हैं, जहाँ हम जलावन लाने जाते हैं। इसे निगल मत लेना, ब्रह्मपुत्र देव! हमारी क्षमता तो तुम्हें कच्ची सुपारी अर्पण करने तक की भी नहीं है। स्त्री के कितने विनम्र भाव हैं प्रकृति के प्रति वह जानती है कि ब्रह्मपुत्र एक विशाल नद है जिसका रौद्र रूप सब कुछ हरण कर सकता है, चूल्हे की आग तक। हम सबको पता है कि इसी ब्रह्मपुत्र का उद्गम तिब्बत स्थित पवित्र मानसरोवर झील से हुआ है। झील से निकलने वाली सांग्पो नदी जब पश्चिमी कैलास पर्वत के ढाल से नीचे उतरती है तो ब्रह्मपुत्र कहलाती है। तिब्बत के मानसरोवर से निकलकर बांग्लादेश में गंगा को अपने सीने से लगाती है यहाँ एक नया नाम पद्मा धारण करती है फिर आगे चलकर मेघना कहलाती है और सागर में समा जाने तक की २९०६ किलोमीटर लंबी यात्रा करते हुए बगैर थके निरंतर प्रवाहित होती है। संपूर्ण ब्रह्मपुत्र का किनारा लोहित किनारा कहलाता है।

हम ब्रह्मपुत्र के किनारे गीली रेत पर कुछ देर चलते रहे अपने ही पैरों के निशानों को देखते हुए। लेकिन कब तक चलते क्योंकि ब्रह्मपुत्र भारत की ही नहीं बल्कि एशिया की सबसे लंबी नदी है और उसके किनारे निरंतर चलना किसी के बस में नहीं। यदि इसे देशों के आधार पर विभाजित करें तो तिब्बत में इसकी लंबाई सोलह सौ पच्चीस किलोमीटर है, भारत में यह नौ सौ अठारह किलोमीटर और बांग्लादेश में तीन सौ तिरसठ किलोमीटर लंबी है यानी बंगाल की खाड़ी में समाने के पहले यह करीब तीन हजार किलोमीटर का लंबा सफर तय कर चुकी होती है। इस दौरान अनेक नदियाँ और उनकी उप-नदियाँ आकर इसमें समा जाती हैं। ब्रह्मपुत्र नदी के पश्चिमी किनारे पर मिकरी पर्वत की तहलटी पर बसा यह उद्यान ब्रह्मपुत्र की बाढ़ से बने समतली क्षेत्र में बसा हुआ है। यहाँ लंबे घने घास के मैदानों के साथ खुले जंगलों में परस्पर जुड़े जल प्रवाह और अनेक छोटी-छोटी झीलों की अनुकूलता है। यही वह वजह है जो आदिम जैव विविधता को भी अपने में आज तक जिन्दा रखे हुए है। यह भी आश्चर्य की बात है कि इस उद्यान का तीन चौथाई से ज्यादा भाग हर साल ब्रह्मपुत्र की बाढ़ में डूब जाता है लेकिन जैव वनस्पतियों को नष्ट करने के बजाय बाढ़ में लाई गई मिट्टी नया जीवन प्रदान करती है जिसके परिणामस्वरूप काजीरंगा में तीन प्रकार की मुख्य वनस्पतियाँ पाई जाती हैं जैसे- जलप्लावित घास का मैदान, उष्णकटिबंधीय सदाबहार वन और उष्णकटिबंधीय अर्ध-सदाबहार वन, जो जंगली जीव जगत को आवास प्रदान करते हैं। जिनमें इसके पश्चिमी क्षेत्र में घास के जो मैदान हैं जहाँ ऊँचाई पर लंबी-लंबी 'एलिफेंट' घास लगी होती है वही गैंडो के छुपने के लिए सुरक्षा प्रदान करती है।

मध्य असम में बसा काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान पूर्वी भारत के अंतिम छोर का ऐसा उद्यान है जिसके लिए कहा जाता है जहाँ इंसान नहीं रहते परंतु भिन्न प्रकार की जीवन की विविधताएँ

आसानी से देखी जा सकती हैं। सबसे महत्त्वपूर्ण यह है कि ४३० वर्ग किलोमीटर क्षेत्रफल में फैला यह उद्यान एक सींग वाले गैंडे का दुनिया का सबसे बड़ा आवास है क्योंकि काजीरंगा का प्राकृतिक परिवेश हरे-भरे जंगलों से भरा हुआ है जिसमें बड़ी-बड़ी एलिफेंट ग्रास, दलदली स्थान और उथले तालाब हैं इसीलिए यह एक सींग वाले गैंडे के साथ-साथ कई अन्य स्तनपाई जीवों जैसे- बाघ, हाथी, चीते, भालू, लंगूर, जीवों जंगली बिल्ली, भेड़िया और अजगर के अलावा सैकड़ों चिड़ियों का आवास हैं। पक्षी प्रेमियों के लिए भी यहाँ पर आमतौर पर पेलिकन, बत्तख, कलहंस, आइबिस, जलका, बगुला, लेसर एडजुलेंट और ईगल बड़ी संख्या में आसानी से देखे जा सकते हैं।

गुवाहाटी से काजीरंगा तक की लंबी सड़क यात्रा करते हुए जब हम काजीरंगा पहुँचे तो शाम होने को थी चाय के लिए मशहूर असम की चाय की खुशबू ने चाय की तलब पैदा की। चाय की स्पेशल गुमटी रास्ते में पड़ी जिस पर अलग-अलग फ्लेवर की चाय पीने को मिली। हम पहुँच चुके थे काजीरंगा के प्रवेश द्वार पर जहाँ हम रुके थे असम चाय बागानों में बनी अशोका ग्रुप की कोटेज में। रातें अँधेरी थी और चारों तरफ चाय के बागान, दूर-दूर तक कोई आबादी नहीं पर कुछ दूर था एक रेस्टॉरेंट जो देशी स्टाइल का ही था खपरैल वाला, सर्दी इस कदर थी कि कमरे से बाहर निकलना कठिन था। साथ में पूरा परिवार था, लगा गलती हो गई चाय बागान और अशोका ग्रुप के चक्कर में हम बेहद निर्जन स्थान पर रुके हैं जहाँ यदि रात को कोई जंगली जानवर आ जाए तो कोई बचाने वाला भी नहीं। चाय और वेजिटेबल पकोड़े के साथ शाम का धुँधला सा अँधियारा कुछ अच्छा भी लग रहा था और दो बेटियों के साथ यात्रा कर रही माँ को डरा भी रहा था। मोबाइल का कोई टावर वहाँ काम शायद नहीं कर रहा था, हम देर तक रेस्टॉरेंट में ही बैठे रहे अन्ताक्षरी खेलते हुए। फिर पता चला, सारे कॉटेज, डोरमेट्री सभी बुक हैं आई आई टी गुवाहाटी के फर्स्ट ईयर के छात्र आने वाले हैं, कुछ ही देर में १६ सीट वाली बस रुकी और वीराने निर्जन बागानों का वीराना जो हटा कि रात भर हंगामा होता रहा। अलाव जला कर रेस्टॉरेंट वाला उस आग में कभी आलू भुन देता रहा, हम शाकाहारी थे पर शायद देर रात असम के लड़कों के लिए उसमें कुछ और भी भुना होगा। दो ग्रुप में अलाव जल रहे थे कोई एक परिवार और था। रात चाँदनी थी जिसे दिल्ली में रहते हुए लम्बे समय से यूँ किसी मैदान में बैठ कर नहीं निहारा था, दामाद आनंद महाराष्ट्रियन है और गाते बहुत अच्छा हैं चाँद को लेकर सभी ने कुछ पुराने गीत गए-----आजा सनम मधुर चाँदनी में हम तुम मिले तो वीराने में भी आ जायेगी बहार--------

अलाव मीटिंग समाप्त हुई इस घोषणा के साथ कि सुबह पाँच बजे उठना है नहीं तो हाथी खाली नहीं मिलेंगे और सूर्योदय से पहले ही निकलना होगा। वो रात बेहद सर्द थी और कॉटेज में हीटर नहीं था रजाई में दुबक कर भी नींद का नाम नहीं था। देर रात जब बाहर लड़कों की हुडदंग कम हुई तो शांत वातावरण में नींद ने घेरा। अल सुबह चाय की केतली लिए लड़का दरवाजे पर था, जल्दी करो दीदी गाड़ी तैयार है। हम सब चाय पीकर स्वेटर, जर्किन शॉल सब ले चल दिए,

सभी हाथी वाले महावत लाइन से खड़े थे हाथी भी सजे धजे पालकी वाले हमारे लिए फॉरेस्ट की तरफ से पहले ही हाथी की बुकिंग थी। रात का अँधेरा छँट रहा था और सूरज की पहली किरणें चमकने लगी थीं। सर्द रात का कोहरा अभी बाकी था उस धुँधलके में हमें हाथियों का एक झुण्ड दिखा जिनके साथ एक बहुत ही छोटा बच्चा भी था, यह देखने लायक दृश्य था बच्चा पीछे रह जाता तो माँ रूकती फिर उसे आगे लेती बच्चा हरी घास के लालच में रुक जाता, माँ शायद उसकी मंशा समझ गई थी उसने एक साफ़ सुथरी जगह से घास का बीड़ा अपनी सुंड में लपेटा और उखाड़ लिया फिर बच्चे की सुंड में रख दिया। थोड़ा ही आगे बढ़े थे कोहरा पूरी तरह हटा भी नहीं था यहाँ पानी के किनारे दलदली जमीन थी जहाँ घास हाथी छुप जाए इतनी बड़ी थी। कोहरे के अन्दर महावत ने इशारा किया---------ओह! लुप्तप्राय भारतीय एक सींग वाले गैंडे को उसके बच्चे के साथ हम सामने देख रहे थे, याद आया एम एस सी ज्यूलोजी का चौथा पेपर जिसके लिए मैंने अपना ट्यूटोरियल राइनोसोर्स, यूनिकोर्निस और डायनोसोर्स पर तैयार किया था, कहाँ सोचा था कभी कि इस विलुप्त प्राय जीवन को इतने पास से कभी देख पाऊँगी। नहीं सोचा था कभी असम मुझे बुलाएगा और मैं दुर्लभ स्थान देख सकूँगी। मेरे सामने सूरज की रोशनी फ़ैल चुकी थी और जैसे हरा भरा ये जंगल मेरा स्वागत गीत गा रहा था। हम थोड़ा सा और आगे बढ़े, तालाब जैसा कोई क्षेत्र था जहाँ दलदल में दो-तीन रायनासोर्स एक साथ दिखे। एक अजूबा ही है इस प्राणी को देखना, काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान न केवल भारत में वरन् पूरे विश्व में एक सींग वाले गैंडे (राइनोसोर्स, यूनिकोर्निस) के लिए प्रसिद्ध है। यह राष्ट्रीय उद्यान असम का एकमात्र राष्ट्रीय उद्यान है जो केंद्रीय असम में स्थित है। उद्यान उबड़-खाबड़ मैदानों, लंबी-ऊँची घास और भयंकर दलदलों से पूर्ण कुल ४३० वर्ग किलोमीटर में फैला हुआ है।

महावत फॉरेस्ट के गाइड भी साथ रखते हैं उसी ने बताया एक सींग वाले ग्रेटर राइनोसोर्स (राइनोसोर्स यूनिकॉर्निस) आईयूसीएन की संकटग्रस्त प्रजातियों की सूची में शामिल है। पिछले कुछ दशकों में इनकी संख्या में आश्चर्यजनक रूप से कमी आई है और ये विलुप्त होने के कगार पर पहुँच चुके हैं। विश्व में इनकी कुल जनसंख्या का करीब ८५ फीसदी भारत में है और असम में इनकी कुल ७५ फीसदी आबादी रहती है। उसने यह भी बताया कि ज्यादा हल्ला होने पर ये दो तरह से प्रतिक्रिया देते हैं या तो दलदल में छुप जाते हैं या गैंडा बड़ी ही आक्रामक मुद्रा में आपकी ओर दौड़ सकता है, बच्चे के साथ हो तो खतरा ज्यादा रहता है।

काजीरंगा की भी एक कहानी है जो गाइड के अनुसार कुछ इस तरह है जिसके अनुसार काजीरंगा और यहाँ का गैंडा बहुत उपयुक्त समय पर संरक्षण में ले लिए गए थे। यदि ऐसा न हुआ होता तो शायद इस प्राकृतिक धरोहर को आज हम न देख पाते। भारत में ब्रिटिश साम्राज्य के वाइसराय लॉर्ड कर्जन की पत्नी ने चाय बागान के मालिक एक मित्र से असम के जंगलों में गैंडे के पाए जाने की बात सुनी तो उन्हें विश्वास नहीं हुआ। सन् १९०४ में वह स्वयं गैंडे को देखने काजीरंगा गई। उस समय उन्हें गैंडा तो कहीं नहीं दिखा, पर उन्होंने उसके भारी-भरकम पाँवों के

निशान देखे। इस आधार पर उन्होंने माना कि ऐसा जानवर काजीरंगा में है। यह जानवर कहीं लुप्त न हो जाए इस दृष्टि से लेडी कर्जन ने अपने पति को मनाया और वायसरॉय ने हुक्म जारी किया कि काजीरंगा में शिकार न किया जाए तथा उसे सुरक्षित क्षेत्र घोषित कर दिया। सन् १९१३ में काजीरंगा सुरक्षित वन को सेंचुरी का दर्जा दिया गया। गैंडे के अतिरिक्त सभी जानवरों की खाल व अन्य अंगों के गैरकानूनी व्यापार को बंद करवा दिया गया तथा जंगल को पर्यटकों के लिए खोल दिया गया। सन् १९७४ में काजीरंगा को राष्ट्रीय उद्यान का दर्जा मिला। यूनेस्को द्वारा घोषित विश्व धरोहरों में से एक काज़ीरंगा राष्ट्रीय उद्यान साल २००५ में १०० वर्ष का हो चुका है। लगभग पाँच गैंडे हमें दो दिनों में दिखे दो बार बच्चे के साथ, इसके साथ ही एक सींग वाले राइनो के अलावा, काजीरंगा राष्ट्रीय उद्यान में हमें हिमालयी वनस्पतियों और जीव के कई अन्य प्रजातियों के रूप में जैव विविधता दिखाई दी। ब्रह्मपुत्र नदी के किनारे यह राष्ट्रीय उद्यान भारतीय हाथियों का भी प्राकृतिक निवास स्थान है, हिरण, बारहसिंघा, आलस भालू, बाघ, तेंदुए, जंगली भैंस, अजगर और पक्षियों की एक विस्तृत विविधता यहाँ देखी।

रंगपारा, जोरहट, दीमापुर जंगल के रास्ते के गाँव भी देखे। चाय जोरहट से खरीदी और चल दिए वापस यहाँ से हम क्योंकि हमें आगे सबसे बड़ा नदी द्वीप देखना था जो ब्रह्मपुत्र के मध्य में है। विश्व का सबसे बड़ा नदी द्वीप माजुली जिसे सँवारने के लिए स्वयं प्रकृति ने अपनी तमाम कलाएं उड़ेल दी हैं। कई तरह के विदेशी पक्षी प्रतिवर्ष आकर इस द्वीप पर बसेरा डालते हैं। यह कहा जा सकता है कि यह प्रवासी पक्षियों का स्वर्ग है। पता चला कि भूमि कटाव व अन्य प्राकृतिक कारणों से माजुली का क्षेत्रफल घट रहा है जो अब ८८० वर्ग किलोमीटर ही रह गया है। यहाँ से सुदूर हिमालय व अन्य पहाड़ियों का मनोहारी दृश्य साफ दिखता है। आत्मिक शांति और आध्यात्मिक चिंतन के लिए श्रेष्ठ माने जाने वाले इस द्वीप पर ही पंद्रहवीं शताब्दी में वैष्णव संत शंकर देव जी और उनके शिष्य माधवदेव जी का मेल हुआ था। माजुली के पश्चिम स्थित बेलगुड़ी में हुए इस मणिकांचन संयोग के बाद यहाँ पहले सत्र की स्थापना हुई। माजुली द्वीप पर पहुँचने वाला व्यक्ति एक आध्यात्मिक सम्मोहन से घिरने लगता है। माजुली द्वीप को देखकर पता चलता है कि प्रकृति हमें जीवन का दर्शन कितनी सहजता से सिखाती है। इसीलिए यहाँ वैष्णव धर्म के मूल्यों और सिद्धांतों के प्रचार के लिए ६५ अन्य सत्र बने, जिनमें से कई प्राकृतिक आपदाओं के कारण बह और ढह गए हैं, जिनमें जीवन का एक अलग दर्शन दिखाई देता है। सृजन और संहार प्रकृति में साथ चलते हैं।

पक्षी प्रेमी हूँ खूब सारे पंछी यहाँ देखे जो बारदोव, बारपेट, माधुपुर इत्यादि क्षेत्रों में भी दिख जाते हैं। माजुली पहुँचने का मुख्य रास्ता जोरहट से जोरहट निमति घाट होकर जाता है। यहाँ से हमें शिलांग जाना था, हम सबेरे नाश्ते के बाद निकल गए, रास्ते भर देखती रही मैं उन घरों को जो अपने घरों के साथ एक छोटा तालाब बना लेते हैं जिसमें मछली उगाई जाती है, यह निर्माण आँगन में बगीचे जैसा है पर इसमें फूल नहीं मछली उगाई जाती है।

"अर्थ मनुष्य द्वारा बनाए गए हैं और क्योंकि आप लगातार अर्थ जानने में लगे रहते हैं, इसलिए आप अर्थहीन महसूस करने लगते हैं।" - ओशो

<u>मन की बात - बन गई जन-जन की बात</u>

■ **कंछिद कुमार**
आशुलिपिक, प्रधान कार्यालय,
ओरिएण्टल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड

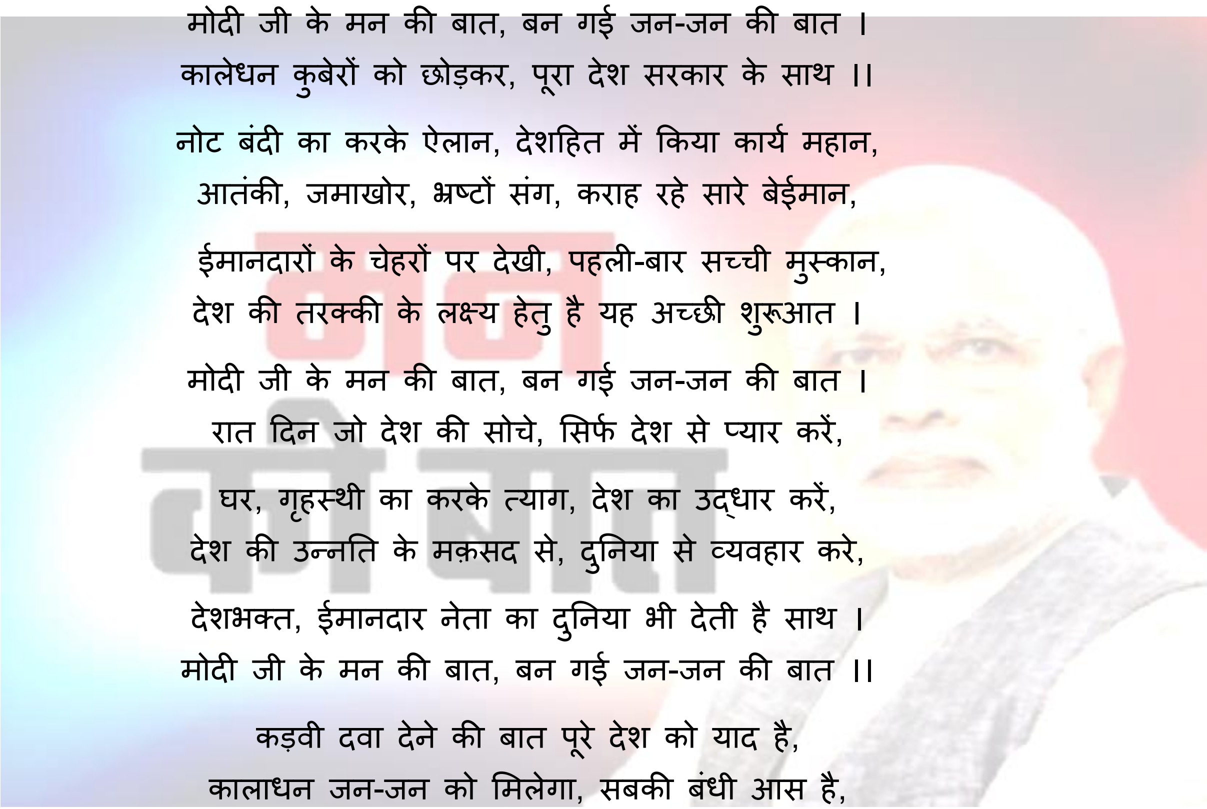

मोदी जी के मन की बात, बन गई जन-जन की बात ।
कालेधन कुबेरों को छोड़कर, पूरा देश सरकार के साथ ।।

नोट बंदी का करके ऐलान, देशहित में किया कार्य महान,
आतंकी, जमाखोर, भ्रष्टों संग, कराह रहे सारे बेईमान,

ईमानदारों के चेहरों पर देखी, पहली-बार सच्ची मुस्कान,
देश की तरक्की के लक्ष्य हेतु है यह अच्छी शुरूआत ।

मोदी जी के मन की बात, बन गई जन-जन की बात ।
रात दिन जो देश की सोचे, सिर्फ देश से प्यार करें,

घर, गृहस्थी का करके त्याग, देश का उद्धार करें,
देश की उन्नति के मक़सद से, दुनिया से व्यवहार करे,

देशभक्त, ईमानदार नेता का दुनिया भी देती है साथ ।
मोदी जी के मन की बात, बन गई जन-जन की बात ।।

कड़वी दवा देने की बात पूरे देश को याद है,
कालाधन जन-जन को मिलेगा, सबकी बंधी आस है,
जनता से वादे का शायद सरकार को एहसास है,

अमल हुए वादों पर बिछेगी, आगे राजनीतिक बिसात ।
मोदी जी के मन की बात, बन गई जन-जन की बात ।।

मोदी जी की अपील सभी सरकार का सहयोग करें,
कालेधन कुबेरों की बातों में ना आयें, इनसे परहेज करें,
लालच वश इनके धन का ना अपने खातों में निवेश करें,

ऐसा साथ दिया जनता ने एतिहासिक जीत दर्ज करा दी,
यू.पी. उत्तराखण्ड के साथ गोवा, मणिपुर में सरकर बना दी,
मोदी जी के मन की बात से देश प्रमियों ने सहमति जता दी,

हमें गर्व है देशभक्त राज के सिर पर है, आज देश का ताज
मोदी जी के मन की बात, बन गई जन-जन की बात ।।

जनता के चमत्कार के बदले चमत्कार दिखलाना होगा,
आशा और उम्मीदों को अमली-जामा पहनाना होगा,

सबसे पहले बेरोज़गारों को रोज़गार दिलवाना होगा,
युवा वर्ग की उन्नति में निहित है देश का विकास।
मोदी जी के मन की बात, बन गई जन-जन की बात ।।

"कनेक्टिंग पीपुल टू नेचर"

■ प्रसून कुमार झा
सेल, निगमित राजभाषा विभाग

"कनेक्टिंग पीपल टू नेचर" आज के समय में सबसे चर्चित विषयों में से एक है, जिसका हिन्दी शाब्दिक अर्थ होता है **लोगों को प्रकृति से जोड़ना । मनुष्य और प्रकृति** एक ही सिक्के के दो पहलू हैं । प्रकृति हमारी धरती माता का आवरण है । प्रकृति के बिना हम धरती पर जीवन की कल्पना भी नहीं कर सकते हैं । यह प्रकृति और प्रकारांतर रूप से मानव पंच तत्वों से मिलकर बना है ***- धरती, जल, वायु, आकाश और अग्नि*** । प्रकृति अपने आप में सम्पूर्ण है और मानव की खुशहाली के लिए समर्पित है । उसका सम्पूर्ण अस्तित्व ही मानव का भला करने के लिए है । प्राण वायु ऑक्सीज़न, भोजन, फल, ईंधन, खनिज पदार्थ, इत्यादि क्या-क्या नहीं है जो हमें प्रकृति नि:स्वार्थ भाव से प्रदान करती है । परन्तु, मनुष्य ने इसे अपने लालच एवं अविवेक से अंधाधुंद दोहन करते हुए प्रकृति के साथ खिलवाड़ किया है और प्रकृति के अस्तित्व को ही खतरे में डाल दिया है । खतरे का बिगुल बज गया है । समय आ गया है कि हम प्रकृति से जुड़ें और प्रकृति के संरक्षण की साथ-साथ इस वसुंधरा पर मानव के अस्तित्व को बचाने के लिए एक बार फिर से मशीनी कोलाहल के इस युग से मानव को प्रकृति के एक सुखद अहसास की ओर ले जाएँ, प्रकृति का संरक्षण करें और स्वयं एवं भावी संतति का भविष्य खुशहाल बनाएँ ।

प्रकृति ने हमें बहुत सारे वरदान दिए हैं, प्रकृति द्वारा प्रदत्त इन्ही वरदानों ने हमारे जीवन को इतना सरल एवं सुखमय बना दिया है । हम प्रकृति के द्वारा ही समस्त सुख-सुविधाओं का उपयोग कर अपना जीवन तो आसान कर रहे हैं परन्तु अपनी आने वाली पीढ़ियों का जीवन कठिन बनाते जा रहे हैं । यदि हम वर्तमान परिप्रेक्ष्य में देखें तो विज्ञान एवं विकास की इस दौड़ में हमें एक अभिशाप भी मिला है, जिसका नाम **प्रदूषण** है । इस प्रदूषण के लिए और कोई नहीं, हमारा अनियंत्रित औद्योगीकरण जिम्मेदार है । विकास की इस दौड़ में प्रदूषण पर पूर्ण रूप से नियंत्रित एवं प्रकृति द्वारा दिये गये ससांधनों का उचित दोहन के साथ ही समग्र विकास संभव है ।

हमारे द्वारा प्रदत्त प्रदूषण के विभिन्न स्वरूप हैं : **जैसे कि जल प्रदूषण, वायु, प्रदूषण, ध्वनि प्रदूषण इत्यादि** । हमारे कल-कारखानों से निकला दूषित पानी जल प्रदूषण के लिए जिम्मेदार है । पीने योग्य पानी लगातार कम होता जा रहा है । हमें पानी का दुरूपयोग रोकना होगा । वर्षा का जल एकत्रित कर जल संरक्षण को बढ़ावा देना होगा । अगर हमने पानी युक्तिपूर्वक उपयोग नहीं किया तो तीसरा विश्व युद्ध पानी और पानी के स्रोतों पर कब्जे को लेकर ही होगा ।

वायु प्रदूषण के चलते हमारे लिये खुली हवा में सांस लेना दूभर हो गया है । हमारे कल-कारखानों से निकलने वाला धुआं एवं सड़कों पर बढ़ते वाहनों का धुआं हवा को जहरीला बनाता जा रहा है । हमें हर हाल में इस जहरीले धुएं को रोकना होगा । इस धुएं को कम करने के लिये हमें

उन्नत प्रौद्योगिकी अपनाने के साथ-साथ अधिक से अधिक पेड़ लगाने होंगे । वृक्षारोपण के लिये सतत् प्रयास करने होंगे । इसे एक अभियान के रूप में चलाना होगा ।

अनियंत्रित औद्योगीकरण और बढ़ती जनसंख्या हमारे हरे-भरे जंगलों को तबाह कर रही है । ये तबाही कभी बाढ़ के रूप में तो कभी सूखे के रूप में सामने आ रही है । बढ़ता हुआ प्रदूषण वैश्विक तापमान वृद्धि के लिए भी जिम्मेदार है । समुद्र का जलस्तर बढ़ रहा है जो हमें हमारी तबाही के संकेत दे रहा है ।

हम अपनी जरूरतों को पूरा करने के लिए बड़े-बड़े संयंत्र लगा रहे हैं । हमें इन संयंत्रों की दक्षता बढ़ाने के साथ-साथ इनमें प्रदूषण नियंत्रण की अत्याधुनिक सुविधाएं स्थापित करनी होंगी, जिससे कि हमारी शश्य श्यामला वसुंधरा को प्रदूषणमुक्त रखने के साथ-साथ प्राकृतिक स्रोतों के संरक्षण की मुहिम को बल मिल सके । हरित ऊर्जा पर आधारित संयंत्र अधिक से अधिक लगाने होंगे । हम सूरज की ऊर्जा से चलने वाले सौर संयंत्र लगाकर वातावरण को हरा-भरा बनाने में सहयोग दे सकते हैं ।

यह पृथ्वी, यह वातावरण, यह प्रकृति एक ईश्वरीय देन है । हमें ईश्वर की इस देन को हरा-भरा एवं प्रदूषण मुक्त बनाकर रखना है । यह हमारी सामाजिक जिम्मेदारी है । हमें जिस प्रकृति ने जीवन का वरदान दिया है, उसका संरक्षण करना भी तो हमारी ही जिम्मेदारी है । हमें स्वयं एवं अपनी संतति - अगली पीढ़ी को प्रकृति के प्रति जागरूक बनाना होगा और अपनी जिम्मेदारी समझनी होगी । हमें अपने बच्चों को एक ऐसी जीवनशैली की समझ देनी होगी जिसमें विकास के साथ ***"कनेक्टिंग पीपल टू नेचर"*** की अहम भूमिका हो । मशीनी युग के कोलाहल से दूर, हमारा एक बार फिर से प्रकृति से समीप हो, हम उसके मधुर संगीत, भोर में पक्षियों के कलरव का आनंद ले सकें । समय आ गया है कि हमें विकास के नाम पर प्रकृति के प्रति अपने दायित्व को अनदेखा नहीं करना है । ऐसा न हो कि हम और आने वाली पीढ़ी स्वच्छ पानी एवं स्वच्छ हवा के लिए त्राहि-त्राहि करने पर मजबूर हो जाएँ । इसलिए यह बहुत जरूरी है कि हम प्रकृति से जुड़ने का संकल्प लें और अन्य लोगों को भी प्रकृति से जुड़ने के लिये जागरूक करें और इसके लिए हर जरूरी कदम उठायें । हमारी सरकार ने भी सभी लोगों को प्रकृति से जोड़ने के लिये अनेक कदम उठाये हैं, जैसे **05 जून को विश्व पर्यावरण दिवस, 22 मार्च को विश्व जल संरक्षण दिवस एवं 02 दिसंबर को राष्ट्रीय प्रदूषण नियंत्रण दिवस**, आदि ठोस कदम उठाए हैं और इन सभी प्रयासों का सकारात्मक प्रभाव भी दिखाई दे रहा है । सरकार के साथ-साथ इस मनोरम वसुंधरा के संरक्षण के लिए हममें से हर किसी को अपना योगदान करना होगा एवं प्रकृति को हरा-भरा और प्रदूषण मुक्त करने की हर स्तर पर की जा रही मुहिम से जुडने का संकल्प लेना होगा ।

दर्पण की खूबी

■ प्रेम सिंह चन्देलिया
भारतीय राज्य फार्म निगम
14-15, फार्म भवन

वो छूते हैं मुझे तो और निखर जाता हूँ,
इतना टूटा हूँ कि छूने से बिखर जाता हूँ ।
पूछा किसी ने रात में कहां खो जाता हूँ,
कोई अपना बिछड़ा हुआ मिल जाए बस,
इसी तलाश में निकल जाता हूँ ।
अंधेरे में कहां किसी से मिल पाता हूँ,
वो छूते हैं मुझे तो और निखर जाता हूँ,
इतना टूटा हूँ कि छूने से बिखर जाता हूँ ।।
जीने की इच्छा तो तभी खत्म हो गई थी,
जब हम दुनिया में आए थे ।
चमक, चटक और खटक तो हम अपने साथ ही लाए थे,
सच्चा चेहरा सबको दिखलाता हूँ ।
वो छूते हैं मुझे तो और निखर जाता हूँ,
इतना टूटा हूँ कि छूने से बिखर जाता हूँ ।।
नेक काम कुछ करके देखो औरों के लिए जीकर देखो,
पीड़ा क्या होती है, मेरी तरह टूट कर देखो ।
सन्देश यह घर-घर पहुँचाता हूँ ,
वो छूते हैं मुझे तो और निखर जाता हूँ,
इतना टूटा हूँ कि छूने से बिखर जाता हूँ ।।
कई बार टूटा कई बार जुड़ा जब देखा अपना ही मुखड़ा;
एक होकर भी अनेक नजर आता हूँ,
छोटा सा है नाम मेरा बस दर्पण कहलाता हूँ ।
वो छूते हैं मुझे तो और निखर जाता हूँ,
इतना टूटा हूँ कि छूने से बिखर जाता हूँ ।।

भारतीय संविधान के महान शिल्पकार: डॉ. भीमराव आंबेडकर

■ कंछिद कुमार
आशुलिपिक, प्रधान कार्यालय,
ओरिएण्टल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड

दुनिया के कई देशों में बड़े महान समाज सुधारक/हस्तियां अवतरित हुई हैं जिन्होंने विषम परिस्थितियों में विशेष योग्यता के धनी होने के कारण अपने प्रतिभाशाली व्यक्तित्व तथा श्रेष्ठ कर्मों-कृतियों से इतिहास बदले हैं। **हमारा देश भी महापुरूषों की जन्मस्थली के रूप में जाना जाता है। समय-समय पर बड़े-बड़े संत महापुरूष, समाज सुधारकों का यहां पदार्पण हुआ है। जीवन को जीने का सबका अलग अंदाज होता है, कुछ लोग अपना पूरा जीवन स्वार्थसिद्धि में व्यतीत कर देते हैं तो कुछ समाज के उज्जवल भविष्य के लिए अपने आपको समर्पित कर देते हैं। समाज के उत्थान के लिए जीने वाले अंतत: सफल होते हैं और अमर हो जाते हैं। ऐसे ही परम ज्ञानी, जीवन को सहजता से जीते हुए अपनी योग्यता के दम पर सामाजिक व्यवस्था में क्रांतिकारी परिवर्तन करने वाले हमारे देश की दिशा और दशा बदलने वाले, बाबा साहब डॉ. भीमराव आंबेडकर 20वीं शताब्दी के श्रेष्ठ चिंतक, ओजस्वी लेखक, निर्भीक व स्पष्टवादी वक्ता, पथभ्रष्ट समाज को दिशा दिखाने के लिए जनता को जुल्म और अन्याय के खिलाफ संघर्ष हेतु प्रेरित करने वाले प्रगतिशील विचारों के मालिक, समाज सुधारक, जिनके प्रत्येक विचार में देश की प्रगति व उन्नति निहित होने के साथ-साथ देश को दुनिया में उच्च शिखर तक पहुँचाने की क्षमता/काबलियत है। जिनके अनुकरण एवं बताए गए मार्ग पर चलकर आज हम और हमारा देश दुनिया के महान देशों में शुमार है।** देश काल और परिस्थिति के अनुसार तत्कालीन समय में जो कुरीतियां समाज में विराजमान थी उनकी कल्पना मात्र से हृदय हिल जाता है- छुआ-छूत, रूढ़िवादी परम्पराएं और पाखण्डवाद उस समय की सबसे ज्वलंत समस्याएं थीं। बाबा साहब ने यह ठान लिया कि समाज से इस विसंगति को खत्म किए बिना इस देश के गरीब और शोषित समाज का कल्याण संभव नहीं है। इन सभी विसंगतियों को समाज से मिटाने का कार्य करने वाले बाबा साहब पहले महापुरूष हुए।

डॉ. भीमराव आम्बेडकर का जन्म 14 अप्रैल, 1891 को मध्य प्रदेश के महु गांव में रामजी मालोजी सकपाल और भीमाबाई के घर में हुआ। डा. साहब को भीमाबाई की सबसे छोटी 14वीं संतान होने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। डॉ. भीमराव के जन्म के समय पूरे देश में छुआ-छूत का माहौल बना हुआ था। अछूत समझे जाने वाले समाज में जन्म लेने के कारण आंबेडकर को बाल्यकाल से ही अनेक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा । उन्हें कक्षा में सबसे पीछे अलग-थलक बैठना पड़ता था, अन्य विद्यार्थियों के साथ वे उठ-बैठ व खेल नहीं सकते थे। अपनी जाति के कारण बचपन में उन्हें काफी अपमान झेलना

पड़ता था। प्राइमरी की शिक्षा प्राप्त करते समय उनसे स्नेह रखने वाले उनके ब्राहमण शिक्षक महादेव आंबेडकर के कहने पर उन्होंने अपना उप नाम सकपाल से बदलकर आंबेडकर कर दिया था जोकि उनके गांव के नाम 'अंबावडे' पर आधारित था। उनके संघर्ष की बदौलत आज - कई धर्मों, जातियों के लोग भी हमारे देश की धर्म, जाति, प्रजातियों के साथ पूर्ण तालमेल बनाकर पूरे अमन व चैन से यहां अपना जीवन यापन कर रहे हैं। इस देश के आवाम को समानता से जीने का हक़ दिलाने वाले डॉ. भीमराव आंबेडकर ही हैं। इस देश पर कई बार विदेशी आक्रमण हुए, मुगलों के अत्याचारों तथा अंग्रेजों की गुलामी से देश के तत्कालीन देश प्रेमियों ने अपने प्राणों को दाव पर लगाकर देश को आज़ादी दिलाई ।

हमारा देश डॉ. भीमराव आंबेडकर द्वारा किए गए प्रेरणादायक कार्यों को कभी भुला नहीं पाएगा, खासतौर पर दलित, शोषित तथा आर्थिक रूप से कमज़ोर वर्ग जिनके उत्थान के लिए उन्होंने अपना पूरा जीवन अर्पित कर दिया। युगपुरूष बाबा साहब को मेरी ये पंक्तियां समर्पित हैं:-

निष्काम भाव से काम किया, देश को आदर्श संविधान दिया ।
शोषित-पिछड़ों के कल्याण हेतु, पूरा जीवन समर्पित किया ।

दुनिया में अग्रणी रहे देश, उज्जवल भविष्य का आधार दिया
छुआ-छूत और पाखण्डवाद से, भारतीय परिवेश को मुक्त किया ।

मानवीय जीवन में आत्म सम्मान महत्वपूर्ण चीज है। इसके बिना मनुष्य का जीवन शून्य है । बचपन से अपमानित और तिरस्कृत जीवन जीने को मज़बूर डॉ. भीम राव अम्बेडकर ने दासता का घोर विरोध किया, वे नहीं चाहते थे कि जो दिन उन्होने देखें हैं वे अन्य दलित और शोषित समाज के सामने आएं। **तत्कालीन समय में घोर अपमान, तिरस्कार, लांछनाएं सहन करते हुए कुशाग्र बुद्धि भीमराव ने कठोर परिश्रम व अध्ययन के बल पर बड़ौदा के महाराज सयाजी राव गायकवाड़ द्वारा प्रदान की गई छात्रवृत्ति के सहारे पढ़ाई पूरी की। डॉ. भीमराव ने हाई स्कूल की परीक्षा एलफिंस्टन हाईस्कूल से 1907 में पास की थी । हाईस्कूल की परीक्षा पास करने के उपरांत 1908 में इनका विवाह रमाबाई से हुआ। डॉ. साहब संस्कृत पढ़ना चाहते थे लेकिन अछूत होने के कारण ब्राहमण अध्यापक पढ़ाने को तैयार नहीं थे, पढ़ाई मे विशेष रूचि होने के कारण उन्होंने 1912 में मुम्बई विश्वविद्यालय से बी.ए. की परीक्षा उत्तीर्ण करके उच्च शिक्षा प्राप्त करने हेतु 1913 में अमेरिका गए। तदोपरांत वर्ष 1915 में कोलम्बिया विद्यापीठ से एम.ए. किया तथा 1916 में विषय- प्राचीन भारत में व्यापार, में पीएचडी हेतु सफल प्रयास किया जिसकी उपाधि वर्ष 1924 में मिली। बाबा साहब ने अपने ज्ञान में अनवरत वृद्धि हेतु शिक्षा ग्रहण करने का क्रम जारी रखते हुए 1917 में भारत वापिसी करते हुए बड़ोदा राज्य में सेवारत हुए, वर्ष 1918 में मुम्बई के सिण्डहेम कॉलिज में प्राध्यापक के पद पर कार्यभार ग्रहण किया। वर्ष 1920 में -'मूकनायक' पाक्षिक की मुम्बई में शुरूआत की तथा 1921 में एम.एस.सी. अर्थशास्त्र की पदवी प्राप्त करते हुए 1922**

में बेरिस्टर की परीक्षा उत्तीर्ण की। डीएससी बार एट लॉ उपाधि से अलंकृत होकर वकालत की शुरूआत की तथा 1924 में 'बहिष्कृत हितकारिणी सभा का कार्य प्रारम्भ करने के साथ 'बहिष्कृत भारत' के प्रथम अंक का प्रकाशन समाज में जागृति लाने के उद्देश्य से किया। वर्ष 1927 में महाड चावदार तालाब सत्याग्रह (जिला रायगढ़, महाराष्ट्र) 20 मार्च से (सार्वजनिक तालाब से दलितों के पानी भरने/पानी पीने के हक़ के लिए आंदोलन) किया। इसी दौरान मुम्बई विधि मंडल में चयनित किए गए साथ ही मुम्बई के शासकीय महाविद्यालय में प्रधानाध्यापक पर कार्यभार संभाला तथा 2 जून को प्राचार्य पद पर नियुक्त हुए। इस पद पर 1938 तक कार्य किया ।

सुख-दुख मानवीय जीवन के अभिन्न अंग हैं, वर्ष 1935 इनके जीवन में दर्द भरा रहा 27 मई, 1935 को इनकी धर्म पत्नी रमाबाई का निधन हो गया । इसी वर्ष 13 अक्टूबर को इन्होंने येवला जिला रायगढ़, महाराष्ट्र में धर्मान्तरण की घोषणा की, 1936 में स्वतंत्र मज़दूर पक्ष की स्थापना की तथा 1937 में इनका प्रान्तीय विधि मंडल में प्रवेश किया। वर्ष 1942 में वायसराय के कार्यकारी मंडल में जुलाई में लेबर मिनिस्टर नियुक्त हुए तथा 1946 तक मंडल में रहे । वर्ष 1946 में 20 जून को मुम्बई में सिद्धार्थ महाविद्यालय की स्थापना की तथा 9 दिसम्बर को संविधान सभा की प्रथम बैठक का आयोजन किया। **15 अगस्त, 1947 को स्वतंत्र भारत का आगाज़ हुआ। बाबा साहब स्वतंत्र भारत के मंत्रिमंडल में प्रथम कानून मंत्री बनाए गए। 1948 में माह फरवरी में संविधान का मसौदा तैयार किया तथा 15 अप्रैल को डॉ. सविता कबीर से विवाह करके अपने वैवाहिक जीवन की शुरूआत की। संविधान के महान शिल्पकार डॉ. साहब ने दुनिया का सबसे बड़ा लिखित संविधान, समाज के हर वर्ग के हितों का ध्यान रखने वाले 'सामाजिक न्याय का एक महान दस्तावेज' अपनी अध्यक्षता में 26 जनवरी, 1949 को पारित किया। देश को सुचारू रूप से चलाने के लिए भारतीय संविधान की संरचना इस प्रकार की है कि अगर तत्कालीन सरकारों द्वारा सच्चे मन से इसे लागू किया गया होता तो आज देश की स्थिति तथा देश के रहनुमाओं की तस्वीर और भी बेहतर होती। उन्होंने समाज के दुर्बल एवं अस्पृश्य माने जाने वाले वर्गों में आत्मसम्मान एवं स्वाभिमान की लहर दौड़ायी और उनके अंदर जागृति व चेतना लाने का महान कार्य किया। हिंदु धर्म की शोषणकारी व्यवस्था चार वर्ण (ब्राह्मण, क्षत्रिय, वैश्य और शूद्र) को बदलने के अथक प्रयास किए। उन्होंने दलित और पिछड़ों को अत्याचारों और असमानता की बेड़ियों से मुक्त कराकर उन्हें सम्मानजनक जीवन जीने का रास्ता दिखाया। उन्होने अपना रास्ता स्वयं बनाने संगठित और शिक्षित होने की प्रेरणा दी।**

बाबा साहब महिलाओं की उन्नति के प्रबल पक्षधर थे , उनका कहना था कि किसी भी देश की उन्नति के लिए महिलाओं को समान अवसर एवं शिक्षित होना अनिवार्य है। आज़ाद भारत के प्रथम कानून मंत्री होने पर उन्होने महिला उत्थान के लिए कई कार्य किए- महिलाओं पर होने वाले अन्यायों को रोकने

उनकी स्थिति में सुधार लाने, उन्हें अधिक अधिकार देने, आत्मनिर्भर बनाने हेतु उन्होंने 1951 में हिंदु कोड बिल पेश किया । इस बिल का उद्देश्य अलग-अलग पंथों में बंटे हिंदु समुदाय के लिए एक समान आचार संहिता तैयार करना था, जिसमें महिलाओं को विवाह, तलाक, उत्तराधिकारी गोद लेना तथा पारिवारिक हिस्सेदारी के मामले में समान अधिकार दिलाना था।

उनका कहना था कि सही मायने में प्रजातंत्र तभी आयेगा जब महिलाओं को पैतृक संपत्ति, घर परिवार, समाज में बराबर का हिस्सा मिलेगा, उनका विश्वास था कि शिक्षा और आर्थिक उन्नति महिलाओं को समाज में बराबर का दर्जा प्रदान कर सकती है।

27 सितम्बर, 1951 को केन्द्रीय कानून मंत्री के पद से त्याग पत्र दे दिया । वर्ष 1952 में कोलम्बिया विश्वविद्यालय द्वारा उनके सम्मान में एक विशेष कार्यक्रम का आयोजन करके 5 जून को एल.एल.डी की विशेष मानद उपाधि से उन्हें विभूषित किया। 1954 (म्यांमार) में बौद्ध परिषद में भाग लेने के उपरांत वे बौद्ध धर्म की ओर आकर्षित हुए तथा 14 अक्टूबर, 1956 को नागपुर में उन्होने बौद्ध पुनरूत्थानवादी डॉ. भीमराव अम्बेडकर का दर्शन भी पूरी तरह से महात्माबुद्ध के दर्शन पर आधारित रहा।

जिस तरह भगवान बुद्ध ने दुख मुक्त मानव समाज हेतु वास्तविक सुख के लिए मानवता की पूजा करना, एक दुसरे के दुख में साथ देते हुए अच्छा बर्ताव करना, करूणा, प्रेम , दया, मैत्रीपूर्ण व्यवहार करना सिखाया, उसी तरह डॉ. आंबेडकर ने समाज को मानसिक गुलामी से मुक्ति, बौद्धिक क्रांति, शिक्षा संगठन और संघर्ष का रास्ता अपनाकर उन्नति के पथ पर अग्रसर किया।

महात्मा बुद्ध के दर्शन को नए आयाम देते हुए उनके कार्यों को गति प्रदान करते हुए अपना सारा जीवन सामाजिक, शैक्षणिक, आर्थिक, धार्मिक, राजनीतिक कार्यों एवं सुधार में व्यतीत करने वाले युगपुरूष डॉ. भीमराव का 6 दिसम्बर 1956 को दिल्ली में निधन हुआ। 20वीं सदी के इस महानायक, महाज्ञानी, महापुरूष, महामानव को उनकी जन्म शताब्दी पर मरणोपरांत भारत के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'भारत रत्न' से विभूषित किया गया । अपने अनुयायी एवं समाज को जाते-जाते ये संदेश दे गए कि - मैं जीवन भर मुसीबतें सहन करके जो कुछ भी कर पाया हूँ, अपने विरोधियों से काफी विरोध झेलने के उपरांत ही कर पाया हूँ ।

आज जिस कारवां को आप यहां देख रहे हैं उसे मैं अनेक कठिनाइयों का सामना करके यहां तक लाया हूँ। अनेक अवरोधों के बाद इस कारवां को आगे बढ़ाते रहना है। अगर मेरे अनुयायी इसे आगे लेकर जाने में असमर्थ हैं, तब उसे वहीं पर छोड़ देना जहां पर यह अभी है, पर किन्हीं परिस्थितियों में इसे पीछे नहीं हटने देना है। सबकी उन्नति व प्रगति के लिए यही मेरा संदेश है।

मेरी निम्न पंक्तियां यूँ समर्पित हैं:

थोड़ा सा पाकर मत उड़ो हवा में, अभी बहुत कुछ पाना बाकी है ।
गरीब और शोषितों को उनका हक़ दिलवाना बाकी है।।
शिक्षा, संगठन और संघर्ष का कारवां आगे बढ़ाना बाकी है।
डॉ. आंबेडकर के सपनों को हकीकत करवाना बाकी है।।

अंत में बाबा साहब की स्मृति को सादर नमन करते हुए सभी सुधी पाठकों से निवेदन है कि भारतीय संविधान के महान शिल्पकार, महामानव, 'भारत रत्न'' डॉ. भीमराव रामजी अम्बेडकर के इस कारवां को आगे बढ़ाने का काम करें तथा निर्बल, शोषित-गरीबों के जीवन स्तर को ऊपर उठाने के सार्थक प्रयास करके अपने अमूल्य जीवन को कृतार्थ करें ।

"मैं ऐसे धर्म को मानता हूँ जो स्वतंत्रता, समानता, और भाई-चारा सिखाए।"

~ डॉ. भीम राव आंबेडकर

<u>आइसक्रीम, बच्चा और समाज</u>

■ मीतू माथुर बधवार
अनुवादक, निगमित कार्यालय, सेल

अभी मैं मॉल के आइसक्रीम काउंटर पर पहुंची ही थी कि लगा पीछे से कोई मेरा दुपट्टा खींच रहा है। यह बालसुलभ कोमलता वाले किन्हीं नन्हें हाथों का स्पर्श मालूम होता था। मेरी बेटी, जिसकी आइसक्रीम की ज़िद मुझे शॉपिंग छुड़ाकर आइसक्रीम काउंटर तक खींच लाई थी, आइसक्रीम दिलाए जाने के नाम पर पहले ही बड़े लाड़ से गलबहियां डाले मेरी गोद में चहक रही थी, फिर भला इतने हक़ से और कौन मेरा दुपट्टा खींचे जा रहा था? मुड़कर देखा तो पाया कि निकर-टीशर्ट पहने कमोबेश मेरी बिटिया की ही उम्र का एक बच्चा मेरा दुपट्टा थामे खड़ा था। मेरे पलटते ही कहने लगा, 'आंटी आइसक्रीम दिला दो'। मैं उसके 'सीधी बात नो बकवास' टाइप लहज़े पर पहले थोड़ा सकपकाई, फिर उसकी मासूमियत पर लाड़ उमड़ आया...मान-न-मान, मैं तेरा मेहमान। सच, इस तरह बेलाग अपनी बात कहना भी एक कला ही है जो हम बड़े बच्चों से सीख सकते हैं।

मैंने इस उम्मीद में चारों तरफ देखा कि कहीं उसके माता-पिता या कोई रिश्तेदार नज़र आ जाए पर वहां कोई नहीं था। अपनी बिटिया जितने बच्चे का आग्रह ठुकराना, और वो भी उस आइसक्रीम के लिए जिसमें बच्चों की जान बसती है, मेरे लिए एक भावनात्मक चुनौती था पर यह सोचकर रुक गई कि बच्चों के प्रति बढ़ते अपराधों के इस दौर में किसी अनजान बच्चे को यूं कुछ खाने की चीज़ दे देना भी तो ठीक नहीं। न मालूम कब आप पर बच्चे को बरगलाने का इलज़ाम आ जाए।

इधर, बच्चे ने मुसलसल एक ही रट लगा रखी थी कि आंटी आइसक्रीम दिला दो। बच्चे को लेने अभी तक कोई नहीं आया था, इसलिए मैंने उसी से पूछा कि वो मॉल में किसके साथ आया है, उसके मम्मी-पापा कहां है पर मेरे हर सवाल के जवाब में उसका एक ही सवाल मिला कि आंटी आइसक्रीम दिलाओगे न? मुझे समझ ही नहीं आ रहा था कि क्या करूं? इस सब के चलते मैं अपनी बिटिया को भी नाराज़ कर बैठी थी। आखिर एक बच्चे के सामने उसे टालकर दूसरे बच्चे को आइसक्रीम कैसे दिलाती? काउंटर पर सजी रंग-बिरंगी आइसक्रीम देख-देखकर बिटिया का मन बेकाबू हो रहा था और अब वो मुंह फुलाकर काउंटर के दूसरे कोने में जा बैठी थी। उसका एक बांह पर दूसरी बांह चढ़ाए मुंह फेरकर बैठना मेरे लिए शुभ संकेत नहीं था। यह उसकी खास कोपभवन मुद्रा थी।

दूसरी तरफ, अब मुझे बच्चे की भी चिंता होने लगी थी। कभी-कभी बच्चे मॉल में माता-पिता का हाथ छुड़ाकर थोड़ा आगे निकल जाते हैं पर ऐसे में अभिभावकों को उन्हें खोजने में इतना वक्त तो नहीं लगता। करीब 4-5 मिनट से तो वो बच्चा मुझसे ही आइसक्रीम की ज़िद किए जा रहा था। कितनी ही बार मेरी बिटिया भी मॉल में ऐसे ही मस्ती में आगे-पीछे हुई है पर हर बार चंद सैकण्डों में ही वो फिर से हमारे साथ हो ली है। अब तक मेरा मन जो बच्चे को आइसक्रीम दिलाने या न दिलाने को लेकर पसोपेश में था, अब उसके अपने माता-पिता के बिछड़ जाने की आशंका से घबराने लगा था। बच्चा भी मेरा हर सवाल अनसुना करके बस आइसक्रीम की रट लगाए हुआ था। चेक की टी-शर्ट और निकर में वो किसी धनाढ्य परिवार का नहीं, तो भी ठीक-ठाक परिवार से मालूम होता था। बच्चे से उसके बारे में कोई भी जानकारी मिलना व्यर्थ था, इसलिए अब मेरे पास एक ही विकल्प था कि मॉल की सिक्योरिटी के पास जाकर बच्चे का हुलिया बताऊं और उसके बारे में एनाउंसमेंट करवाऊं। अचानक मुझे एहसास हुआ कि कहीं दूर से एक जोड़ी आंखें मुझ पर टिकी हुई हैं। मैंने महसूस किया कि एक अधेड़ उम्र का आदमी कनखियों से मुझे, बल्कि इस पूरे घटनाक्रम को देख रहा है। उसकी आंखों में छिपी धूर्तता से अचानक ही जैसे मेरी छठी इन्द्रिय जागृत हो गई और मुझे सारा माजरा समझ आ गया।

मुझसे आइसक्रीम की ज़िद कर रहा बच्चा दरअसल इन्हीं महाशय के साथ मॉल आया था और संभवत: खुद इन्होंने ही मुझे आइसक्रीम काउंटर की ओर जाते देख उसे मेरे पीछे लगाया था। जिस तरह से वह व्यक्ति हमारी तरफ नज़रें बचाकर ताक रहा था, साफ़ पता चल रहा था कि वह इस पूरे घटनाक्रम का एक मुख्य पात्र है और उस पर भी मेरी सीमित बुद्धि और एक बच्ची की मां होने का अनुभव यही कहता है कि एक चार-पांच साल का बच्चा इतना तो जागरूक होता ही है कि एक अनजान जगह पर अपने माता-पिता से बिछड़ जाने के संकट का एहसास कर पाए जबकि यह बच्चा मेरे बार-बार पूछने पर भी अपने घरवालों के बारे में न बताकर आइसक्रीम की ही रट लगाए जा रहा था यानी वह किसी अपने के आसपास होने को लेकर आश्वस्त था। जब मैंने उस व्यक्ति को अर्थपूर्ण तरीके से घूरना शुरू किया तो उसने बच्चे को कुछ इशारा किया और बच्चा तुरंत उसके पास भाग गया।

मैंने बिटिया को आइसक्रीम दिलाकर अपने फौरी संकट से निज़ात पाई पर मन खट्टा हो गया था। एक तरफ, एक छोटे-से बच्चे को आइसक्रीम के लिए तरसाने का अपराधबोध हो रहा था तो दूसरी ओर, उसके साथ आए उस अधेड़ की मानसिकता को लेकर मन में आक्रोश था। अगर बच्चा आइसक्रीम के लिए ज़िद कर रहा था और वह उसे वहां से महंगी आइसक्रीम नहीं दिला सकता था तो क्या यह बेहतर नहीं होता कि वह उसे मॉल के बाहर से अपेक्षाकृत सस्ती आइसक्रीम दिला देता...आखिर पहनावे और हुलिए से वे दोनों ही इतने निर्धन तो नहीं दिखाई देते थे और अगर यह भी मान लिया जाए कि वह भी उसकी जेब से बाहर की बात थी तो क्या उसने बच्चे को मांगकर खाने का रास्ता दिखाया, वह सही था? ऐसा भी नहीं है कि बच्चा रो-रोकर आइसक्रीम के लिए आधा हुआ जा रहा हो, वह पूरी तरह संयत लग रहा था। फिर भी उसने एक अबोध बच्चे को सही समझाइश देने के बजाय उसे परजीवी बनने का पाठ पढ़ाया। उस अबोध बालक ने तो यही जाना कि कुछ खरीद न पाओ तो मांग लो...यानी जाने-अनजाने उसमें मांगकर खाने के बीज डाल दिए गए थे। आज बच्चा छोटा और निर्बल था तो आइसक्रीम न मिलने पर लौट गया पर कल को यह भी तो संभव है कि यही बच्चा बड़ा होकर इच्छित वस्तु को पाने के लिए आक्रामक होकर हिंसक तरीकों का सहारा लेने लगे क्योंकि यह तो इसने जाना ही नहीं कि श्रम से अप्राप्य भी प्राप्य बनाया जा सकता है।

या फिर किस्सा कुछ और ही था...यह भी संभव है कि पूरा मामला बच्चे की आइसक्रीम खाने की चाह का न होकर अधेड़ की धन-लोलुपता का हो और बच्चे का इस्तेमाल सिर्फ एक मोहरे की तरह किया जा रहा हो। यह सोचकर बच्चे को आइसक्रीम मांगने भेजा जा रहा हो कि लोग एक अनजान बच्चे को मॉल से 100-150 रुपए की आइसक्रीम न भी दिलाएंगे तो उस पर तरस खाकर 10-20 रुपए तो दे ही देंगे और इस प्रकार अधेड़ के अपने कुत्सित इरादे पूरे हो सकेंगे और यहीं सामाज के रूप में हमारी भूमिका भी महत्त्वपूर्ण हो जाती है। जो दान किसी को समर्थ बनाने के बजाय उसका सामर्थ्य छीन लें, क्या उसे दान कहना उचित है? मैंने तो इस आंखों देखी से यही जाना कि उदार होना अच्छी बात पर है पर जिसे आप दान देने जा रहे हैं, उसकी पात्रता जांच लेना भी ज़रूरी है ताकि किसी ऐसे व्यक्ति को इसका खामियाज़ा न भुगतना पड़े जो सही मायनों में ज़रूरतमंद हो। शास्त्रों में भी कहा गया है, ''लब्धानामपि वित्तानां बोद्धव्यौ द्वावतिक्रमौ। अपात्रे प्रतिपत्तिश्च पात्रे चाप्रतिपादनम् ॥'' अर्थात् वित्तवानों के हाथ से धन का दो तरीकों से दुरुपयोग होता है: कुपात्र को दान देकर, और सत्पात्र को न देकर।

भारतीय वीरों को नमन

■ कंछिद कुमार
आशुलिपिक, प्रधान कार्यालय,
ओरिएण्टल इंश्योरेंस कंपनी लिमिटेड

भारतीय सेना की वीरता का गान गूंजे सारे जहान में।
आओ मिलकर लहराएं तिरंगा भारत माँ की शान में।।
नमन करें उन वीरों को जो भारत माँ के प्यारे,
आज़ादी के दिवाने जो कभी न रण में हारे,
वीरगति को प्राप्त होने से पहले दुश्मन संहारे,

जिनके शौर्य की गाथा गूंजती धरती और आसमान में।
आओ मिलकर लहराएं तिरंगा भारत माँ की शान में।।

आतंकियों की खैर नहीं अब भारत सरकार ने ठाना है,
आतंकियों के आकाओं का भी नामों-निशान मिटाना है,
गद्दारों के घर में घुसकर, यमलोक उन्हें पहुँचाना है,

वीरों के शासन में आतंकी छिपते फिरेंगे जहान में ।
आओ मिलकर लहराएं तिरंगा भारत माँ की शान में।।

भारत वीरों ने धरती से सदैव आतंक मिटाया है,
श्रीराम, कृष्ण के रूप आकर किया राक्षसों का सफाया है,
कई बार धरती माता को राक्षसों से मुक्त कराया है,

आज सैनिकों के रूप में भगवान दिखता हर मुस्कान में ।
आओ मिलकर लहराएं तिरंगा भारत माँ की शान में।।

दुनिया खुशियां मनाती है, जब-जब आतंकी मरते हैं,
वे वीर सभी को भाते हैं, जो अंत आतंकियों का करते हैं,
अपने प्राणों को ताक पर रख जो रक्षा वतन की करते हैं,

हमें फक्र है वीरों की कोई कमीं नहीं हिंदुस्तान में ।
आओ मिलकर लहराएं तिरंगा भारत माँ की शान में।।

गोस्वामी तुलसीदास का रचना वैविध्य

गोस्वामी तुलसीदास भारतीय संस्कृति और जनमानस के महाकवि काव्यस्रष्टा और जीवनदृष्टा रहे है । मध्यकालीन साहित्य में उन्होनें समाज का आर्दश रूप प्रस्तुत किया है । उन्होंने ऐसा साहित्य रचा जो भारतीय जनमानस का सबसे पवित्र, अलौकिक, सर्वमान्य, धर्मशास्त्र बन गया ।

तुलसीदास जी की दृष्टि सर्वव्यापी और लोकमंगलकारी थी । उन्होंने तत्कालीन समाज की

विसंगतियों और विद्रूपताओं को आर्दश और नैतिकता की संकल्पना में लोकजीवन में गहरे से उतार दिया है । उनके द्वारा रचित काव्य ग्रंथ हिन्दी साहित्य और भारतीय जनमानस की अनमोल धरोहर है । भविष्य निर्माता तुलसीदास जी का रचना संसार भारतीय जनमानस में आर्दश और संस्कृति के मूल्यों के रूप में बसा हुआ है इसीलिए भारतीय संस्कृति ` उन्नायक लोकनायक गोस्वामी तुलसीदास जी ही माने जाते है ।

हजारी प्रसाद द्विवेदी के मतानुसार **"भारतवर्ष का लोक-नायक वहीं हो सकता है, जो समन्वय करने का अपार धैर्य लेकर आया हो भारतीय समाज में नाना भाँति की परस्पर विरोधिनी संस्कृतियां, साधनाएं, जातियों, आचार-विचार और पद्वतियां प्रचलित है ।"**[1]

भक्तिकाव्य के कवियों में तुलसीदासजी सर्वाधिक प्रसिद्ध सर्वमान्य लोकनायक, लोककवि, जनहितकारी, लोकमंगलकारी, और भक्त कवि के नाम से जाने जाते है । गोस्वामीजी हिन्दी साहित्य के ऐसे कवि है जिन्होंने अपनी रचना का मूल उद्देश्य 'लोकमंगल' का विधान करना स्वीकार किया हैं ।

"सामान्यत: 'लोक' शब्द से तात्पर्य है सामान्य जन और 'मंगल' से तात्पर्य है 'कल्याण' ।" [2] अर्थात सामान्यजन का कल्याण ही लोक मंगल कहलाता है ।

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने लिखा है कि "आप कवि थे भक्त थे, पंडित थे, सुधारक लोकनायक थें और भविष्य के स्रष्टा भी थे ।"

गोस्वामी तुलसीदासजी मध्यकालीन काव्य के ऐसे कवि है जिन्होंने अपनी काव्य रचना का मूल उद्देश्य लोकमंगल का विधान करना स्वीकार किया है । उन्होंने स्वयं लिखा है -

"कीरति भनिति भूति भल सोई ।
सुरसरि सम सब कहं हित होई ।।"

अर्थात र्कीति कविता और ऐश्वर्य वही अच्छा होता है जो गंगा के समान सबका हित करने वाला हो ।

तुलसीदास जी के समकालीन समाज की सामाजिक, राजनैतिक और सांस्कृतिक उथल-पुथल की हलचलें सम्पूर्ण समाज को प्रभावित कर रही थी । विदेशी मुस्लिम आक्रांताओं का साम्राज्य स्थापित हो जाने पर भारतीय जनमानस को छल छद्म एवं जधन्य अपराधों के द्वारा शोषित और प्रताडित किया जा रहा था । कुछ विद्वानों के अनुसार इसाई धर्म के प्रभाव के कारण लोग अध्यात्म की ओर झुकने लगें । कुछ के अनुसार स्वानुभूति से लोग अध्यात्म की ओर जाने लगें । शासन और जीवन की अस्थिरता से लोगों का मन विरक्ति और अध्यात्म की और बढ़ता जा रहा था । समाज में निचलें स्तर के पुरूष और स्त्री दरिद्र, अशिक्षित और रोग-ग्रस्त ` । जीवन घोर त्रासदियों से घिर रहा था । वैरागी हो जाना मामूली बात थी । जिनके घर की

संपत्ति नष्ट हो गयी या स्त्री मर गयी संसार में उनके लिए कोई आर्कषण नही रहा वहीं तुरंत संन्यासी बन गया । चारों ओर घोर निराशा और वैराग्य तेजी से जन-जन में अपनी गहरी पैठ बनाने लगा था ।

हजारी प्रसाद द्विवेदी जी ने तत्कालीन समाज का जीवंत चित्रण इस प्रकार किया है कि "समाज में धन की मर्यादा बढ़ रही थी दरिद्रता हीनता का लक्षण समझी जाती थी । पंडितों और ज्ञानियों का समाज के साथ कोई भी संपर्क नही था । सारा देश विश्रृंखल, परस्पर विच्छिन्न, आर्दशहीन और बिना लक्ष्य का हो रहा था एक ऐसे आदमी की आवश्यकता थी, जो इन परस्पर विच्छिन्न और दूर-विभ्रष्ट टूकडों में योग-सूत्र स्थापित करें तुलसीदास का आविर्भाव ऐसे समय में ही हुआ ।"[3]

तुलसीदास का प्रारम्भिक जीवन घोर अभावों और दु:खों से गुजरा था । अभुक्त-मूल में पैदा होने से उनके माता-पिता ने उन्हें छोड़ दिया था । इनका बचपन दर-दर भीख मॉगकर गुजरा । भूख की अग्नि में जाति-पॉति का भेद भस्म हो गया । वे सुजाति-कुजाति के टुकड़ों पर पले बढ़े थे । स्वयं के माता-पिता और समाज के उच्च वर्ग ब्राहमण समुह की उपेक्षा और तिरस्कार झेलते हुए धर्म और जाति के बंधन शीथिल पडने लग गए थे ।

"जीवन के तमाम सारे छद्‌म, छल-फरेब, पाखंडों का एक जमघट, धूर्त्तता-कुटिलता के कार्य व्यापार, एक ऐसा समाज जिसमें ठग हैं, व्याभिचारी हैं, झूठे और बेईमान हैं , लम्पटता हैं । काशी के धर्म के पाखंड तथा कदाचार, चोर, उचक्के, बटमार सब उन्हें मिलते है । धर्म के ध्वजावाहकों का असली चेहरा उनकी ऑखों के सामने आता है । पाप, दुष्कर्म, अकाल, माहमारी, दारिद्रय का एक पूरा संसार उनके समक्ष उद्‌घाटित होता है चापलूसी, स्वार्थ, मानवीय, सामाजिक, पारिवारिक, नाते-रिश्तों का क्षय, उन्हें भीतर से हिला देता है ।" [4]

तुलसीदास जी ने जन-जन की पीडा को दूर करने के लिए लोकमंगल की कामना को सिद्‌ध करते हुए श्री राम के आदर्श रूप की संकल्पना को समाज में स्थापित किया । तुलसी की विलक्षण प्रतिभा इस बात में हैं कि उन्होंने भक्त और रचनाकार की भूमिकाओं का एक साथ सफल निर्वाह किया है ।

रामस्वरूप चतुर्वेदी के अनुसार तुलसी के राम का आदर्श चरित्र इस प्रकार रेखांकित **है "तुलसी राम का चरित्र चुनते हैं अपने लिए जो मर्यादा पुरूषोतम हैं और हर तरह से आदर्श के प्रतिरूप हैं, आदर्श पुत्र, आदर्श शिष्य, आदर्श मित्र, आदर्श भ्राता, सबसे अधिक आदर्श पति और आदर्श शासक ।"** [5]

राम भक्ति का आरम्भिक रूप दक्षिण के आलावार संतों से माना जाता है । उत्तर भारत में राम भक्ति के आचार्य के रूप में रामानंद जी का नाम लिया जाता है । राम भक्ति शाखा के सर्वश्रेष्ठ कवि के रूप में गोस्वामी तुलसीदासजी ही माने जाते है । ईश्वर में पूरी आस्था और मनुष्य में पूरा सम्मान यह दोनों दृष्टियां तुलसीदास जी में एक दूसरे से जुड़ी हुई है । भक्त और रचनाकार की सफल भूमिका के कारण तुलसी के काव्य की पहुँच घर-घर में है । राम कथाओं के माध्यम से भक्ति का तुलसी ने गृहस्थ जीवन का आदर्श चित्रण किया है । तुलसी की प्रमाणिक रचनाओं में 12 ग्रन्थों को मान्यता प्राप्त है :-

1 रामचरित्रमानस, 2. जानकी मंगल, 3 पार्वती मंगल, 4 गीतावली, 5 कृष्ण गीतावली, 6 विनय पत्रिका, 7 दोहावली, 8 बरवै रामायण, 9 कवितावली (हनुमान बाहुक), 10 वैराग्य संदीपनी, 11 रामज्ञा प्रश्न, 12 रामलला नहछू - है । इन काव्य रचनाओं के अतिरिक्त अन्य रचनाएं भी मिली हैं ।

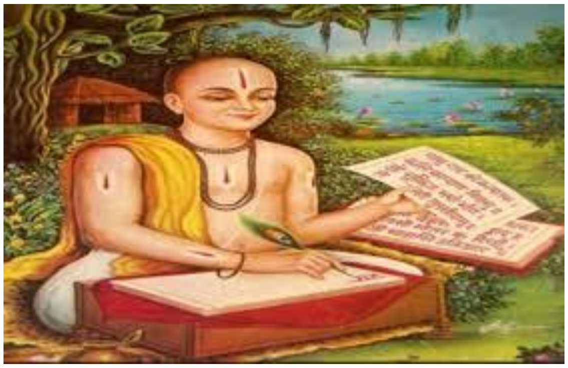

रामचरित्रमानस मर्यादा पुरूषोषतम राम के जीवन चरित्र को दर्शाने वाला श्रेष्ठ महाकाव्य है, जिसमें गोस्वामी जी ने भारतीय संस्कृति, धर्म, दर्शन, भक्ति और कवित्त का अद्‌भुत समन्वय प्रस्तुत किया है । इस महाकाव्य में 7 काण्ड है - बालकाण्ड, अध्योध्यकाण्ड, अरण्यकाण्ड, किस्किंधाकाण्ड, सुन्दरकाण्ड, लंकाकाण्ड और उत्तरकाण्ड है ।

आचार्य रामचंद्र शुक्ल के अनुसार **"गोस्वामी जी की भक्ति पद्धति की सबसे बड़ी विशेषता है उसकी सर्वांगपूर्णता । जीवन के किसी पक्ष को सर्वथा छोड़कर वह नहीं चलती है । सब पक्षों के साथ उसका सामन्जस्य है । न उसका कर्म या धर्म से विरोध है, न ज्ञान से धर्म तो उसका नित्यलक्षण है ।"** [6]

तुलसीदास जी की रामभक्ति साधना, साहित्य, धर्म और संस्कृति के रूप में वर्तमान समाज की रीढ़ के रूप में अवस्थित है । लोक कवि तुलसीदास एक और समाज सुधारक, धार्मिक जीवनदृष्टा, दार्शनिक संत, महात्मा, जनहितकारी के रूप में तो दूसरी और विराट समन्वय और लोकमंगल की कामनाओं से समाज को व्यापक रूप में जोडने का कार्य किया है ।

तुलसीदास ने सभी परस्पर विरोधी धार्मिक विचारों को अपने जीवन दर्शन से ऐसी दिशा प्रदान की है जिससे शंकर के अद्वैतवादी दर्शन तथा शाक्तों का अनुसारण करने वाले विरोधी पक्ष को भी अधर्म, तथा पापाचार से हटाकर शुद्ध राम भक्ति में लाने का सफल प्रयास किया है । गोस्वामी जी ने राम तथा शिव को परस्पर एक दूसरे का प्रशंसक दिखाकर शैवों तथा वैष्णवों को अत्यन्त निकट लाने का महत्वपूर्ण कार्य किया है । उनकी मौलिक दार्शनिक मान्यताओं में सगुण, अगुण, ज्ञान, भक्ति तथा कर्म का औचित्य और महत्व स्थापित किया है । उन्होंने सभी मत-मतान्तरों से ऊपर उठकर सगुण रामभक्ति के माध्यम से ज्ञान, कर्म तथा भक्ति का अद्भूत समन्वित 'सियाराममय' मानवतावादी जीवन दर्शन दिया है ।

"गोस्वामी जी की भक्ति-भावना मूलत: लोकसंग्रह की भावना से अभिप्रेरित है । जिस समय समसामयिक निर्गुण भक्त संसार की असारता का आख्यान कर रहे थे और कृष्ण भक्त कवि अपने आराध्य के मधुर रूप का आलम्बन ग्रहण कर जीवन और जगत् में व्याप्त नैराश्य को दूर करने का प्रयास कर रहे थे, उस समय गोस्वामी जी ने मर्यादा पुरूषोत्तम राम के शील, शक्ति और सौन्दर्य से मंडित संवलित अद्भुत रूप का गुणगान करते हुए लोकमंगल की साधनावस्था के पथ को प्रशस्त किया तुलसी का समन्वयवाद उनकी भक्ति-भावना में भी दिखाई देता है । 'रामचरितमानस' में उन्होंने राम और शिव दोनों को एक-दूसरे का भक्त अंकित करके वैष्णव एवं शैव सम्प्रदायों को एक ही सामान्य भावभूमि प्रदान की है ।"[7]

गोस्वामी जी का प्रादुर्भाव ऐसे समय में हुआ जब धर्म, समाज, राजनीति, आदि सभी क्षेत्रों में विषमता, विभेद एवं वैमनस्य व्याप्त था । धार्मिक क्षेत्र में अनेक सम्प्रदाय भ्रष्ट हो चुके थे । मुस्लिम साम्राज्य का प्रभाव और विस्तार बढ़ता जा रहा था । नाथपंथी योगियों, एवं वाममार्गी

सिद्धों, शैवों, शाक्तों, अद्वैतवादी वैष्णवों द्वैतवादी वैष्णवों तथा अनेक धार्मिक पंथों तथा संप्रदायों ने हिंदू समाज की धार्मिक जड़ें खोखली कर दी थीं । राम और कृष्ण के सगुण भक्तों में भी परस्पर काफी मतभेद उभर रहे थे । मुस्लिम शासक तलवार के आतंक और बल से हिन्दूओं को मुस्लिम धर्म की गिरफ्त में ले रहे थे । **"अपनी रचनाओं द्वारा गोस्वामी तुलसीदास ने भारतीय जीवन और संस्कृति तथा उसके आदर्शों का मूर्त रूप प्रस्तुत किया है । संगीत और जीवन के भावों से युक्त होने के कारण तुलसी का रामचरितमानस और विनयपत्रिका अत्यन्त लोकप्रिय ग्रन्थ हैं । उनके काव्यों में आचार, धर्म, नीति, दर्शन, संस्कृति और काव्य अपने उत्कृष्ट रूप में प्राप्त होते हैं । इसी से गोस्वामी जी को लोकमानस का रससिद्ध कवि तथा भक्त माना जाता है । उनकी मूल चेतना समन्वयवादी है । उन्होंने निर्गुण, सगुण, शैव, वैष्णव, राम-भक्ति निवृति संबंधी दृष्टिकोणों को समन्वित करके जीवन का एक परिमार्जित रूप प्रस्तुत किया है ।"**[8]

मध्यमकालीन भक्ति काव्य में गोस्वामी तुलसीदासजी श्रेष्ठ स्थान रखते है । तत्कालीन युग में रामचतिमानस की रचना करके संपूर्ण मानवता और समाज का मार्गदर्शन किया है गोस्वामी जी मध्य-युग के ही नहीं वरन आधुनिक युग में भी भक्ति और आदर्शों के कारण जननायक के रूप में जाने जाते है । **"प्रसिद्ध इतिहासकार वेन्सेंट स्मिथ ने इन्हें अपने युग का सर्वश्रेष्ठ महापुरूष माना है और इन्हें अकबर से भी महान इस कारण स्वीकार किया है कि इन्होंने जो करोड़ों मानव-हृदयों पर शाश्वत विजय अपनी रचनाओं द्वारा प्राप्त की है उसके सामने सम्राट अकबर की राजकीय विजय नगण्य है ।"**[9]

तुलसीदास जी के काव्य की सफलता का श्रेय उनकी लोक समन्वय शक्ति में है उन्हें लोक और शास्त्र दोनां का बहुत व्यापक ज्ञान प्राप्त था । उनकी भाषा शैली एक प्रकार से समन्वय की विराट प्रक्रिया रही है । उस समय संस्कृत भाषा अपने चरम स्तर से प्रकाण्ड पण्डितों को प्रभावित कर रही थी आमजन इससे अनभिज्ञ और अछूता था । तुलसीदासजी ने जन भाषा अवधि और ब्रज को अपने रचना कर्म का आधार बनाकर इसे भक्ति काव्य से जन-जन का कण्ठाहार बना दिया ।

हजारी प्रसाद द्विवेदी के मतानुसार **"उनकी भाषा में भी एक प्रकार के समन्वय की चेष्टा है । वह जितनी लौकिक है, उतनी ही शास्त्रीय । उसमें संस्कृत का मिश्रण बड़ी चतुरता से किया गया है .... उसमें एक ऐसा लचीलापन है जो कम कवियों की भाषा में मिलता है ....जायसी की भाषा में एक ही प्रकार का सहज, सरल भाव है, चाहे वह राजा के मूँह से निकली हो या रानी के मुँह से । किंतु तुलसीदास की भाषा विषयानुकूल तथा वक्ता और बोद्रधा-स्रोता के**

अनुसार हो जाती है । परिचारिका की भाषा और रानी की भाषा में अंतर है, निषाद की भाषा जितनी ही सरल और अकृत्रिम है, वशिष्ठ की भाषा उतनी ही वैदगध्यमंडित और परिष्कृत तुलसीदास के पहले किसी हिंदी-कवि ने इतनी मार्जित भाषा का प्रयोग नहीं किया था । काव्योपयोगी भाषा लिखने में तो वे कमाल करते है ।" [10]

गोस्वामी जी की रचनाओं का मूल उद्देश्य लोकमंगल है जो समाज एवं परिवार में नैतिक और आदर्श मूल्यों की स्थापना से ही संभव है 'रामचरितमानस' महाकाव्य समाज और परिवार में अपने पात्रों के चरित्र से इन आदर्श जीवन मूल्यों की स्थापना करता आया है । तुलसीदास जी ने एक तरफ आदर्शों की स्थापना की है तो दूसरी तरफ भारतीय समाज की पतनोन्मुख दशा और उसके कारणों को भी रेखांकित कर उन्हें दूर करने का प्रयास भी किया है । कवितावली में समाज की भयावह दुरावस्था का चित्रण इस प्रकार किया है :

"खेती न किसान को भिखारी को न भीख भलि ।
बनिक को बनिज न चाकर को चाकरी ।।
जीविका विहिन लोग सीधमान सोच बस ।
कहैं एक-एकन सौं, कहाॅ जाइ का करी ।।" [11]

दरिद्रता से लोगों का हाल-बेहाल है । किसान को खेती नहीं है, भिखारी को भीख नहीं मिलती है । व्यापार सारा चौपट हो गया है । चाकरी (रोजगार) किसी को नहीं मिल रहा । सब और लोग जीविकाविहीन हो गये है, जीने के लाले पड़े हुए हैं । सब तरफ से विपन्न लोग एक-दूसरे से पूछते हैं कि कहाॅ जायें ?..क्या करें ?... तुलसीदास का जीवन घोर अभावों और विपन्नता में गुजरा था वे जन-जन की पीड़ा को स्वयं भुगत चुके थे इसीलिए उन्होंने अपनी रचना में लोक पीड़ा को सशक्त रूप से उपस्थित किया है इससे पहले राज स्तुति और स्वस्तुति की रचनाएं ही ज्यादातर देखने को मिली हैं । तुलसीदास जी की रचनाओं की प्रासंगिता तत्कालीन समय से लेकर आज भी उतनी ही प्रासंगिक है । वे संत, कवि, महात्मा ही नहीं वरन भविष्य स्राष्टा भी थे । आज भी समाज इसी भयावह दौर से गुजरता हुआ दिखाई दे रहा है । खेती न किसान को......................कहाॅ जाइ का करी ।

गोस्वामी जी स्वयं ब्राहमण परिवार में जन्म लेने के उपरांत भी जात-पात, उँच-नीच के भीषण शोषण से गुजरते है । जन्म लेते ही माता-पिता द्वारा परित्याग, समाज के सभी वर्गों से भीख मांगकर अपना जीवन यापन करना, समाज के सब वर्गों को समान महत्व देने के कारण उच्चवर्ग के ब्राहमण पंडितों द्वारा प्रताड़ित किया जाना तुलसीदास जी को वर्णाश्रम धर्म के खिलाफ खड़ा कर देता है जो उन्हें आज भी प्रासंगिक सिद्ध करता है ।

वर्णाश्रम की त्रुटियों के खिलाफ तुलसीदास जी के विचारों को बच्चनसिंह ने इस प्रकार अंकित किया है :- **"जिस वर्णलोक की स्थापना के लिए तुलसीदास विकल थे, वे स्वयं उसके शिकार हो जाते हैं । संभवत: पंडित वर्ग उनके ही वर्ण पर उँगली उठाने लगा था इसीलिए क्षुब्ध होकर उन्हें कहना पड़ा कि कोई मुझे कुछ भी कहे, मुझे किसी की बेटी से बेटा ब्याह कर उसकी जात नहीं बिगाड़नी हैं .... न मेरी कोई जाति-पॉति है और न किसी की जाति-पॉति से कोई मतलब है । विवशता-भरी वाणी में वे कहते हैं -' मॉग के खैबों मसीत के सोइबो । लैबों को एक न दैबों को दोऊ ।' वर्णाश्रम धर्म के इतने बड़े समर्थक के वर्ण के प्रति संदेह कितनी बड़ी विडंबना है ।"** [12]

तुलसीदासजी ने अपनी रचनाओं में अपने समय की परिस्थितियों का यथातथ्य वर्णन किया है । वर्णाश्रम धर्म की वकालत के अलावा समाज के विभिन्न वर्गों, ऊंची-नीची विषम परिस्थितियों, मानवीय संवेदनाओं, बेरोजगारी, अकाल, दारिद्रय, राज व्यवस्था के भ्रष्ट आचरण आदि विषयों से उनकी तत्कालीन युगबोध और उस काल के सच्चे प्रतिनिधि के रूप में सशक्त रूप से पहचान स्थापित करती है ।

संत तुलसीदास जी की प्रतिभा महान और अंतदृष्टि गहरी है । तुलसी की भक्ति पद्धति में नवधा भक्ति का पूर्ण स्वरूप दृष्टिगोचर होता है नवधा भक्ति का अंतर्गत श्रवण, कीर्तन, पादसेवन, अर्चना, वंदना, दा स्य, सख्य, नाम स्मरण और आत्म निवेदन आते हैं । तुलसी ने राम नाम की महिमा का प्रतिपादन स्थान स्थान पर किया है । वे कहते है :

राम जपु राम जपु राम जपु बावरे ।
घोर भव नीर निधि नाम निज नाव रे ।।

इनकी भक्ति साधना विशेष रूप से आत्मनिवेदन और दास्य भाव की कही जाती है । 'विनयपत्रिका' में गोस्वामी जी की इस आत्म निवेदन और दास्य भाव की झलक इस प्रकार से है :-

'तू दयालू दीन हौं, तू दानि हौं भिखारी ।
हौं अनाथ पातकी, तू पाप-पुंजहारी ।।
नाथ तू अनाथ को, अनाथ कोन मो सो
ब्रहम तू है जीव हौं, तू ठाकुर हौं चेरों ।।

गोस्वामी जी राम के शील, शक्ति और सौंदर्य पर मुग्ध है पर अपने और राम के बीच सेवक और सेव्य भाव को स्वीकारते है । तुलसी की भक्ति में दैन्य की प्रधानता है इस दैन्य के कारण

वे अपने इष्टदेव को महान एवं सर्वगुण, सम्पन्न तथा स्वयं को तुच्छ, छोटा, खोटा और पापी मानते हैं । आत्म निवेदन की इस प्रवृत्ति के कारण वे कहते है कि :-

'राम से बड़ो है कौन । मोसो कोन छोटो ?

राम सौ खरो है कौन मोसो कौन खोटो ??

लोक कल्याण की दृष्टि से तुलसीदास जी का काव्य अत्यन्त उपादेय है उन्होंने आदर्श की नींव पर भविष्य के समाज की उज्जवल आधारशीला निर्मित की है । नवधा भक्ति से साहित्य को जन-जन तक पहूँचा दिया है । सेवक सेव्य भाव से समाज का हर वर्ग ईश्वर भक्ति से स्वानुभूति प्राप्त कर आदर्शों को ग्रहण करता रहा है । गोस्वामी जी को लोक और शास्त्र के व्यापक ज्ञान की अनुभूति थी उनका सारा काव्य समन्वय की विराट चेष्टा है । जाति, धर्म, भाषा, सामाज, संस्कृति और भक्ति के समन्वय से रामचरितमानस, विनयपत्रिका और अन्य ग्रन्थों के माध्यम से आज भी समाज के सभी वर्गों का चहुँमुखी मार्गदर्शन कर रहे है ।

हजारी प्रसाद द्विवेदी ने गोस्वामी तुलसीदास जी का महत्व बताने के लिए अनेक विद्धानों की उक्तियों का संयोजन इस प्रकार किया है **"नाभादास ने इन्हें कलिकाल का 'वाल्मीकि' कहा था । स्मिथ ने इन्हें 'मुगलकाल का सबसे महान व्यक्ति' माना था, ग्रियर्सन ने इन्हें बुद्धदेव के बाद सबसे बड़ा लोक-नायक' कहा था, और यह तो बहुत बार कहा है कि उनकी रामायण उत्तर-भारत की बाइबिल है ।"** [14]

इन सभी उक्तियों का तत्पर्य यही है कि तुलसीदास असाधारण शक्तिशाली कवि, लोकनायक और महात्मा थे ।

गोस्वामी तुलसीदास जी साहित्यिक और सांस्कृतिक दोनों ही दृष्टियों से बेजोड़ है । इसी कारण साहित्य, संस्कृति, भाषा, आदर्श, भक्ति आदि के संगम के कारण लोक नायक 'तुलसीदास' मध्यकाल से लेकर आज आधुनिक काल में भी घर-घर में अपना सर्वोच्च स्थान बनाये हुए है । तुलसीदास जी की रचनाएँ जन-जन का कण्ठाहार बनकर सुख, शांति, भक्ति, श्रद्धा, संस्कृति और आदर्शों की अनमोल धरोहर मानवीयता को अपने अमृत से अभिसिंचित कर पल्लवित और पोषित कर रही है ।

1 हिन्दी साहित्य: उद्भव और विकास, हजारी प्रसाद द्धिवेदी पृष्ठ संख्या 131
2 हिन्दी आलोचना की पारिभाषिक शब्दावली, डॉ अमरनाथ पृष्ठ 318
3 हिन्दी साहित्य की भूमिका, हजारी प्रसाद द्धिवेदी पृष्ठ संख्या 98
4 हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी, पृष्ठ 216

5 हिन्दी साहित्य और संवेदना का विकास, रामस्वरूप चतुर्वेदी पृष्ठ 49
6 हिन्दी साहित्य का इतिहास, आचार्य रामचंद्र शुक्ल, पुष्ठ 147
7 हिन्दी साहित्य का इतिहास, संपादक डॉ. नगेन्द्र पुष्ठ 189
8 हिन्दी साहित्य का परिचयात्मक इतिहास डॉ. भागीरथ मिश्र पुष्ठ 68
9 हिन्दी साहित्य का परिचयात्मक इतिहास डॉ. भागीरथ मिश्र पुष्ठ 66
10 हिन्दी साहित्य: उद्भव और विकास, हजारी प्रसाद द्धिवेदी पृष्ठ संख्या 134
11 भक्ति आन्दोलन और भक्ति काव्य, शिवकुमार मिश्र, पृष्ठ संख्या 209
12 हिन्दी साहित्य का दूसार इतिहास, बच्चन सिंह, पृष्ठ संख्या 147
13 साहित्यिक निबंध, डॉ रेणु वर्मा, पृष्ठ संख्या 71
14 हिन्दी साहित्य: उद्भव और विकास, हजारी प्रसाद द्धिवेदी पृष्ठ संख्या 125

डॉ. गौतम कुमार मीणा
सहायक प्रबंधक
क्षेत्रीय कार्यालय - 2 दिल्ली

****

इरेडा

में

वर्ष 2017 के दौरान

राजभाषा कार्यान्वयन

और

अनुपालन से

संबंधित

गतिविधियां

नराकास के तत्वावधान में इरेडा द्वारा आयोजित 'समाचार रिपोर्टिंग प्रतियोगिता की रिपोर्ट'

दिनांक 31 जनवरी, 2017 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, (उपक्रम), दिल्ली के तत्वावधान में भारतीय अक्षय ऊर्जा विकास संस्था सीमित (इरेडा) द्वारा भारत पर्यावास केन्द्र, लोदी रोड, नई दिल्ली के मैरीगोल्ड हॉल में 'समाचार रिपोर्टिंग' प्रतियोगिता आयोजित की गई । इस प्रतियोगिता में अतिथि श्री डी.पी. डंगवाल, नराकास सचिव, विशेषज्ञा सुश्री मीना गुप्ता, सहायक निदेशक, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, गृह मंत्रालय, भारत सरकार आमंत्रित थे तथा इरेडा की ओर से श्री पी. श्रीनिवासन, महाप्रबंधक (मानव संसाधन), श्री नरेश वर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक (मानव संसाधन), सुश्री संगीता श्रीवास्तव, प्रबंधक (राजभाषा), श्री आलर कुल्लू, सहायक हिंदी अधिकारी और हिंदी अनुभाग के सभी अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे । प्रतियोगिता में बीएचईएल, हिंदुस्तान पेट्रोलियम कॉर्पोरेशन लि. एवं गेल (इंडिया) लि. सरीखे विभिन्न सार्वजनिक उपक्रमों (पीएसयू) से आए हुए कुल 19 प्रतिभागियों ने हिस्सा लिया ।

सबसे पहले सुश्री संगीता श्रीवास्तव, प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा सभी मंचासीन अतिथियों और प्रतिभागियों का स्वागत किया गया । इसके उपरांत श्री पी.श्रीनिवासन, महाप्रबंधक (मा.सं.), इरेडा ने राजभाषा के प्रयोग पर संक्षिप्त प्रकाश डाला और सभी प्रतिभागियों को प्रतियोगिता के लिए शुभकामनाएं दीं और साथ में यह भी कहा कि इरेडा सदैव से राजभाषा के प्रचार-प्रसार में अग्रसर रहा है । तत्पश्चात श्री डी.पी. डंगवाल, नराकास सचिव ने प्रतियोगिता में आमंत्रण हेतु धन्यवाद दिया और कहा कि हिंदी के प्रयोग को बढ़ावा देकर ही हम एक-दूसरे से जुड़ सकते हैं ।

प्रतियोगिता की शुरूआत विशेषज्ञ सुश्री मीना गुप्ता, सहायक निदेशक, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो द्वारा प्रतियोगिता संबंधी नियम बताकर की गई । 'समाचार रिपोर्टिंग' प्रतियोगिता के विषय समकालीन एवं अत्यंत रोचक रखे गए थे । विभिन्न सार्वजनिक उपक्रमों से आए प्रतिभागियों ने 'समाचार रिपोर्टिंग' प्रतियोगिता के विषयों को रोचक और प्रासंगिक कहा । कुछ प्रतिभागियों ने दिए गए विषय पर सभी आयामों को समेटते हुए प्रभावशाली तरीके से रिपोर्टिंग की । प्रतियोगिता का समापन श्री नरेश वर्मा, वरिष्ठ प्रबंधक (मानव संसाधन), इरेडा द्वारा धन्यवाद ज्ञापन देकर किया गया ।

महाप्रबंधक (मानव संसाधन), इरेडा प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए

प्रतियोगिता का संचालन करते हुए विशेषज्ञा श्रीमती मीना गुप्ता, सहायक निदेशक, केन्द्रीय अनुवाद ब्यूरो, गृह मंत्रालय

विभिन्न उपक्रमों से उपस्थित प्रतिभागी, नराकास सचिव, विशेषज्ञा और इरेडा द्वारा प्रतियोगिता का संचालन करते हुए अधिकारी/कर्मचारी

विभिन्न उपक्रमों से आए प्रतिभागीगण

श्री डी.पी. डंगवाल, नराकास सचिव, प्रतिभागियों को संबोधित करते हुए

नराकास सचिव तथा प्रतिभागियों का स्वागत करते हुए प्रबंधक (भराजाषा), इरेडा

प्रतियोगिता आयोजन हेतु नराकास द्वारा सम्मान

स्कोप कॉम्प्लेक्स, लोधी रोड, नई दिल्ली में 10 मार्च 2017 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति, (उपक्रम), दिल्ली की 44वीं बैठक में इरेडा को नरकास के तत्वावधान में 'समाचार रिपोर्टिंग' प्रतियोगिता के सफल आयोजन हेतु प्रशास्ति पत्र और शील्ड प्रदान करके सम्मानित किया गया। इरेडा द्वारा आयोजित उक्त हिंदी प्रतियोगिता में विभिन्न सरकारी उपक्रमों से कुल 19 कार्मिकों ने भाग लिया था।

इस अवसर पर श्री प्रभास कुमार झा, भा.प्र.से., सचिव, राजभाषा विभाग, भारत सरकार द्वारा यह सम्मान प्रदान किया गया तथा साथ में स्टील अथारिटी ऑफ इंडिया के प्रबंध निदेशक श्री पी.के .सिंह भी उपस्थित रहे। सम्मान ग्रहण करने के लिए इरेडा की ओर से श्री पी.श्रीनिवासन, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) और सुश्री संगीता श्रीवास्तव, प्रबंधक (राजभाषा) ने बैठक में भाग लिया।

इरेडा में हिंदी कार्यशाला का आयोजन

8 जून, 2017 को इरेडा, कॉर्पोरेट कार्यालय, अगस्त क्रांति भवन के बोर्ड रूम में हिंदी कार्यशाला **'सच और भ्रम'** विषय पर आयोजित की गई। कार्यशाला की शुरुआत श्री पी. श्रीनिवासन, महाप्रबंधक (मानव संसाधन) द्वारा संकाय श्री शम्मी सुख के स्वागत से किया गया। उसके उपरांत सुश्री संगीता श्रीवास्तव, प्रबंधक (मानव संसाधन-राजभाषा) द्वारा कार्यशाला संकाय का परिचय कराया गया । इस अवसर पर हिंदी अनुभाग के सभी अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे। कार्यशाला श्री शम्मी सुख, पूर्व अपर महाप्रबंधक, बीएचईएल एवं प्रख्यात लेखक और प्रेरक द्वारा संचालित की गई।

इस कार्यशाला में इरेडा के 19 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया और अपने कार्यालयी व सामान्य जीवन में और अधिक सतर्कता से कार्य करने के लिए प्रेरणा ली। कार्यशाला का सत्र रोचक होने के साथ-साथ इंटरैक्टिव भी रहा।

इरेडा
IREDA

इरेडा में नगर स्तरीय राजभाषा सम्मेलन का आयोजन

इरेडा द्वारा 13 जुलाई, 2017 को नगर राजभाषा कार्यान्वयन समिति (उपक्रम), दिल्ली के तत्वावधान में इंडिया हैबिटेट सेंटर, लोदी रोड के टैमरिंड सभागार में 'नगर स्तरीय राजभाषा सम्मेलन' का भव्य आयोजन किया गया।

इस सम्मेलन के मुख्य अतिथि श्री प्रभास कुमार झा (आईएएस), सचिव, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार की गरिमामयी उपस्थिति रही और साथ में इरेडा के सीएमडी श्री कुलजीत सिंह पोपली, श्री एस. पी. एस. जग्गी, ईडी (कार्मिक एवं प्रशासन), सेल, नराकास (उपक्रम) दिल्ली के सदस्य सचिव श्री डी.पी. डंगवाल, राजभाषा विभाग, गृह मंत्रालय, भारत सरकार से उप निदेशक (कार्यान्वयन) श्री प्रमोद कुमार शर्मा, श्री पी. श्रीनिवासन महाप्रबंधक (एचआर)), इरेडा तथा नराकास (उपक्रम), दिल्ली के सदस्य उपक्रमों से लगभग 100 से भी अधिक पदाधिकारी उपस्थित थे।

दीप प्रज्ज्वलन कर सम्मेलन का शुभारंभ किया गया। सम्मेलन का संचालन सुश्री संगीता श्रीवास्तव, प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा किया गया । इस अवसर पर मुख्य अतिथि महोदय ने हिंदी के महत्व को रेखांकित करते हुए मूल कार्य हिंदी में किए जाने पर बल दिया, जिससे अनुवाद पर कम से कम निर्भरता हो तथा यह भी कहा कि स्वदेशी तकनीक को विकसित की जाए ताकि उत्पादों के नाम हमारी भाषा में हों । विभिन्न उपक्रमों से आए हुए अधिकारियों ने प्रश्नों के माध्यम से अपने-अपने विचार प्रस्तुत किए जिसका उत्तर मुख्य अतिथि ने भाषा में वैज्ञानिक एवं तकनीकी जैसे पहलुओं को शामिल करते हुए दिया ।

इरेडा के सीएमडी श्री कुलजीत सिंह पोपली ने उदाहरण पेश करते हुए कहा कि ज्यादातर देश शिक्षा, प्रौद्योगिकी, व्यवसाय और सेवाओं में अपनी भाषाएं प्रयोग करते हैं और वे विकसित राष्ट्रों के पटल पर हैं। फिर हम क्यों नहीं? इसी क्रम में श्री सिंह ने कहा कि सामान्य बोल-चाल के शब्दों का हिंदी के काम-काज में प्रयोग किया जाना चाहिए। इसके साथ ही यह भी विश्वास दिलाया कि इरेडा हमेशा से ही राजभाषा के प्रयोग में अग्रणी है और ऐसे सम्मेलन भविष्य में भी होते रहने चाहिए।

इरेडा में 1 से 14 सितम्बर तक हिंदी पखवाड़ा, 2017 का भव्य आयोजन

प्रत्येक वर्ष की भांति, भारत सरकार के दिशा-निर्देशों के अनुसार इस वर्ष भी इरेडा में सितम्बर माह में **हिंदी पखवाड़ा का आयोजन 01 से 14 सितम्बर** तक किया गया। इस उपलक्ष्य में दिनांक 01 सितम्बर को टैमरिंड हॉल, आईएचसी, लोदी रोड, नई दिल्ली में हिंदी पखवाड़ा का शुभारंभ किया गया।

इस अवसर पर इरेडा के सीएमडी श्री कुलजीत सिंह पोपली ने उदाहरण पेश करते हुए कहा कि ज्यादातर देश अपनी शिक्षा, प्रौद्योगिकी, व्यवसाय और सेवाओं में अपनी भाषाएं प्रयोग करते हैं और वे विकसित राष्ट्रों के पटल पर हैं । इसी क्रम में उन्होंने कहा कि सामान्य बोल-चाल के शब्दों का हिंदी के काम-काज में प्रयोग किया जाना चाहिए । इस कार्यक्रम में इरेडा के उच्चाधिकारी/अधिकारी एवं सभी कर्मचारी उपस्थित रहे । इसके बाद इन्नोवेटिव थिंकिंग, माइंड मैपिंग और थॉट मैनेजमेन्ट विषय पर श्री बी.के. पीयूष, निदेशक, ब्रह्मकुमारी द्वारा व्याख्यान दिया गया। व्याख्यान काफी रोचक रहा और इससे इरेडा कार्मिकों ने नई ऊर्जा का अनुभव किया।

IREDA

हिंदी पखवाड़ा के दौरान विभिन्न विषयों पर निम्नलिखित हिंदी प्रतियोगिताओं/कार्यशाला का आयोजन किया गया: **समाचार वाचन प्रतियोगिता, सामान्य हिंदी ज्ञान, हिंदी में पत्र लेखन, यात्रा वृतांत, अंताक्षरी प्रतियोगिता हिंदी और कार्यशाला – कम्प्यूटर पर हिंदी में कार्य कैसे करें?**

इसके अतिरिक्त निम्नलिखित 02 हिंदी प्रतियोगिताएं हिंदी वर्ष-2017 के अंतर्गत पखवाड़ा से पूर्व आयोजित की गई थीं:

चित्र अभिव्यक्ति और आशुभाषण प्रतियोगिता।

उपर्युक्त प्रतियोगिताओं/कार्यशाला में इरेडा के 110 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया।

हिंदी दिवस, 14 सितम्बर के अवसर पर इरेडा के कॉर्पोरेट कार्यालय में हिंदी दिवस समारोह मनाया गया। प्रबंधक (रा.भा.), सुश्री संगीता श्रीवास्तव ने समारोह के संचालन की शुरुआत करके सभी उपस्थित कार्मिकों को हिंदी दिवस की बधाई दी और उसके उपरांत निदेशक (वित्त), श्री एस.के.भार्गव ने माननीय गृह मंत्री, भारत सरकार का हिंदी संदेश का पाठ किया और सभी को हिंदी दिवस की शुभकामनाएं दीं। तत्पश्चात मुख्य सतर्कता अधिकारी, श्री फ़िलिप बारा द्वारा माननीय नवीन एवं नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री का हिंदी संदेश पढ़ा गया और इसी क्रम में, महाप्रबंधक (मा.सं.), श्री पी. श्रीनिवासन ने इरेडा के अध्यक्ष एवं प्रबंध निदेशक का हिंदी संदेश का पाठ किया और हिंदी दिवस पर सभी इरेडा कार्मिकों को शुभकामनाएं प्रेषित कीं और कहा कि इरेडा हिंदी के प्रचार-प्रसार की दिशा में सदैव से ही अग्रसर है। इसके साथ-साथ हिंदी पखवाड़ा के दौरान एवं पूर्व में आयोजित हिंदी प्रतियोगिताओं के विजेताओं की घोषणा की गई। इस अवसर पर इरेडा के सभी विभागों से अन्य अधिकारी/कर्मचारी उपस्थित रहे ।

इरेडा
IREDA

हिंदी कार्यशाला का आयोजन

12 दिसंबर, 2017 को इरेडा, कॉर्पोरेट कार्यालय में हिंदी कार्यशाला "हिंदी का मानकीकरण एवं अशुद्धियां" विषय पर प्रस्तावित की गई थी लेकिन कार्यशाला के लिए आमंत्रित संचालक संकाय अपरिहार्य कारणवश कार्यालय में उपस्थिति नहीं हो सके। अत: उनकी अनुपस्थिति में कार्यशाला का संचालन स्वयं प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा किया गया। कार्यशाला में हिंदी में कार्य करने में आने वाली कठिनाइयों पर खुले सत्र में चर्चा की गई। इसके अतिरिक्त 'ध्यान एवं योग' विषय पर विचार व्यक्त करते हुए प्रबंधक (राजभाषा) द्वारा व्याख्यान दिया गया। कार्यशाला के द्वारा प्रतिभागियों की सहभागिता उत्साहवर्धक रही। इस प्रकार सफलतापूर्वक कार्यशाला का लक्ष्य प्राप्त हुआ।

इस अवसर पर हिंदी अनुभाग के सभी अधिकारियों/कर्मचारियों सहित उक्त कार्यशाला में इरेडा के 24 अधिकारियों/कर्मचारियों ने भाग लिया। कार्यशाला का सत्र इंटरैक्टिव होने के साथ-साथ ज्ञानवर्धक भी रहा तथा कार्यशाला में भाग लेने वाले कार्मिकों ने इसकी सराहना भी की।

वर्तमान हरित पावर के प्रोत्साहन से
भारत का कल होगा ऊर्जावान